सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" स्वयं की पीड़ा स्वयं से अधिक कोई और अनुभव नहीं कर सकता क्यूंकि सहना और उसे समझना ठीक वैसे ही है जैसे जलना और जलता देखना ...!!

अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–215 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, सोमवार 24 अगस्त 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

बोनस फॉर्मूला बना शोषण का नया पैंतरा, बीएकेएस ने खोला मोर्चा

बहुमत के आधार पर समझौता, संविधान का उल्लंघन : बीएकेएस एएसपीएलआईएस फॉर्मूला में प्रोडक्शन और मुनाफे से लिंक नहीं बोनस

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल कर्मचारियों के बोनस समझौते को लेकर भिलाई इस्पात कर्मचारी संघ (बीएकेएस) ने सेल प्रबंधन, एनजेसीएस नेताओं और इस्पात मंत्रालय पर गंभीर आरोप लगाए हैं। संघ का कहना है कि एलिट क्लास के गठजोड़ से कर्मचारियों का शोषण हो रहा है।

बीएकेएस के कार्यकारी अध्यक्ष रणधीर कुमार ने दस्तावेज सार्वजनिक करते हुए कहा कि सेल प्रबंधन और बिना निर्वाचित यूनियन प्रतिनिधियों वाली कमेटी एनजेसीएस के कुछ यूनियनों के बीच बहुमत के आधार पर 08 फरवरी 2023 को एएसपीएलआईएस (बोनस) फॉर्मूला पर समझौता किया गया, जिसे जबरदस्ती लागू किया जा रहा है।

नियमों का उल्लंघन कैसे?

एनजेसीएस संविधान के अनुसार सभी समझौते आम सहमति से होने चाहिए, बहुमत से नहीं। राज्यसभा प्रश्न संख्या 1637 के जवाब में भी यही कहा गया था।

08 फरवरी 2023 के समझौते पर वीएमएस, इंटक, एचएमएस ने हस्ताक्षर किए, एटक और सीटू ने नहीं किए।

बोनस सब कमेटी में भिलाई, राउरकेला, सलेम, भद्रावती जैसे किसी भी यूनिट के निर्वाचित रिकॉग्नाइज्ड यूनियन नेता को शामिल नहीं किया गया।

सब कमेटी के गठन की मंजूरी फुल एनजेसीएस से नहीं ली गई।

20 जनवरी 2024 के एनजेसीएस मिनट्स में लिखा है कि श्रमिक प्रतिनिधियों ने फॉर्मूले पर सहमति नहीं दी थी और आगे चर्चा तय थी, लेकिन आगे कोई बैठक नहीं हुई।

सेल के अधिशासी निदेशक बी.एस. पोपली ने 16 अक्टूबर 2024 को आरएलसी नई दिल्ली को लिखे पत्र में खुद स्वीकार किया कि योजना बहुमत के आधार पर तय हुई।

फॉर्मूले में खामी क्या?

बोनस को प्रोडक्शन और मुनाफा (कर पूर्व लाभ) से लिंक नहीं किया गया।

पिछले तीन साल के बोनस की औसत राशि को आधार बनाया गया।

1.04 का स्पेशल फैक्टर मनमर्जी से जोड़ा गया, जिसका प्रोडक्शन–लाभ से संबंध नहीं।

चेयरमैन/डायरेक्टर से लेकर सभी अधिकारियों को कर पूर्व लाभ का 5 प्रतिशत पीआरपी मिल रहा है, जबकि कर्मचारियों को 25–28 हजार रुपये जटिल फॉर्मूले से जबरदस्ती खाते में भेजकर शोषण किया जा रहा है। बीएकेएस ने कहा कि पांचों यूनियन नेताओं और इस्पात मंत्रालय की चुप्पी से साबित होता है कि सभी ने मिलकर शोषण का गठजोड़ बना लिया है। अब न्यायपालिका या सड़क पर संघर्ष से ही न्याय मिलेगा।

राजनीतिक विश्लेषण

BJP की राजनीति अब Predictable? नई टीम, 15 अगस्त का भाषण और बदला हुआ नैरेटिव

आलोक तिवारी / नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी की नई संगठनात्मक टीम के गठन के बाद देश की राजनीति में एक नया विमर्श शुरू हो गया है। क्या भाजपा की राजनीति अब Predictable हो गई है? 15 अगस्त के प्रधानमंत्री के भाषण का घटता असर, 'वंदे मातरम' बनाम राष्ट्रवाद की राजनीति और विपक्ष की बदलती रणनीति ने इस सवाल को और गहरा कर दिया है।

भाजपा की नई टीम: सरप्राइज का अभाव और आंतरिक समीकरण*

भाजपा की हाल ही में घोषित नई टीम को राजनीतिक जानकार काफी हद तक प्रत्याशित मान रहे हैं। इस बार टीम में कोई बड़ा क्रांतिकारी फेरबदल नहीं दिखा।

सरप्राइज फैक्टर कम: नई टीम में चौंकाने वाला तत्व न के बराबर है। नियुक्तियां संतुलन साधने वाली ज्यादा, साहसिक कम नजर आती हैं।

स्मृति ईरानी की वापसी: आक्रामक और फाइटर नेता के तौर पर पहचान रखने वाली स्मृति ईरानी की संगठन में वापसी को लेकर सवाल उठ रहे हैं कि इस वापसी में दो साल का समय क्यों लगा? इसके पीछे संघ और संगठन के बीच के समीकरणों को देखा जा रहा है।

संघ–भाजपा तालमेल: नितिन नवीन जैसे नेताओं का धीरे–धीरे अपनी टीम को आगे बढ़ाना, यह दर्शाता है कि भाजपा अब 2029 के लिहाज से संघ के साथ समन्वय को अधिक महत्व दे रही है।

15 अगस्त की स्पीच और बदलता राष्ट्रीय नैरेटिव

स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री के भाषण को लेकर इस बार बदला हुआ माहौल दिखा।

भाषण के प्रभाव में कमी: पिछले वर्षों की तरह पगड़ी, प्रतीक और भावनात्मक लाइनों पर इस बार मीडिया और सार्वजनिक बहस सीमित रही। भाषण अब सुर्खियों से आगे जन–मानस में वह गूंज नहीं बना पाया।

मुद्दों की राजनीति की वापसी: जनता अब प्रतीकात्मक नैरेटिव से हटकर वास्तविक मुद्दों – रोजगार, महंगाई, आर्थिक सुरक्षा पर जवाबदेही मांग रही है। राष्ट्रवाद की भावना अपनी जगह है, लेकिन रोजमर्रा के सवाल भारी पड़ रहे हैं।

'वंदे मातरम' और राष्ट्रवाद का राजनीतिकरण

'वंदे मातरम' को लेकर छिड़ी नई राजनीति अब देशभक्ति से ज्यादा राजनीतिक हथियार बनती दिख रही है। विश्लेषकों के अनुसार भाजपा इसे भावनात्मक ध्रुवीकरण के लिए इस्तेमाल कर रही है, वहीं कांग्रेस आज भी अपने 1937 के ऐतिहासिक संकल्प पर कायम है, जिसके तहत 'वंदे मातरम' के प्रारंभिक दो पदों को ही आधिकारिक रूप से गाया जाता है। जनता का नजरिया भी बदला है। अब यह बहस गौण हो गई है कि कौन क्या गा रहा है, सवाल यह है कि 12 साल के शासन में बुनियादी मुद्दों पर सरकार ने क्या किया।

कांग्रेस की रणनीति और विपक्ष का बढ़ता भरोसा

इस पूरे परिदृश्य में विपक्ष, विशेषकर कांग्रेस की रणनीति में स्पष्ट बदलाव दिख रहा है। राहुल गांधी वरिष्ठ और अनुभवी नेताओं को नई भूमिका में साध रहे हैं। कांग्रेस अब गैर–जरूरी धार्मिक विमर्श के बजाय आर्थिक सुरक्षा और नौकरियों जैसे मुद्दों पर फोकस कर रही है, जिस पर जनता का भरोसा धीरे–धीरे बढ़ रहा है।

गले में रूद्राक्ष, मस्तक पर भस्म और मुख पर शिवनाम हो तो जनम–मरण के चक्र से छूट जाता है मनुष्य

अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा सीहोर वाले ने शिवमहापुराण कथा के विराम दिवस पर कही ये बात

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

बोल बम सेवा एवं कल्याण समिति द्वारा जयंती स्टेडियम भिलाई में आयोजित सात दिवसीय सावन शिवमहापुराण कथा का रविवार को विराम हो गया। विराम दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा ने उत्तरप्रदेश में विराजमान कपिलेश्वर महादेव की कथा सुनाई।

पंडित मिश्रा ने कहा कि कलपक्ष ऋषि ने संसार के मनुष्यों के उद्धार के लिए शिवजी से तीन प्रश्न करने हेतु घोर तप किया। पहला – मनुष्य को 94 नरकों से कैसे बचाया जाए, दूसरा – जनम–मरण के चक्र से कैसे छूटे, तीसरा – धन–वैभव की प्राप्ति कैसे हो। शिवजी ने उत्तर दिया कि नरक से बचने के लिए मंत्रजाप और नामजाप करना होगा। जनम–मरण के चक्र से मुक्ति के लिए गले में रूद्राक्ष, मस्तक पर भस्म और मुख पर शिवनाम होना चाहिए। यह भी त्रिवेणी संगम के समान है। धन–वैभव के लिए जल में लाल चंदन मिलाकर शिव को अर्पित करना चाहिए।

कर्जा लेकर व्रत–पूजन और कथा न कराएं

पंडित मिश्रा ने कहा कि शिवजी को रिझाने के लिए आडंबर न करें। कर्जा लेकर कभी व्रत, पूजन, उद्यापन और शिवमहापुराण कथा मत करवाओ। जब भोलेनाथ संपदा दें तब कथा करवाने का सोचें। उन्होंने कहा कि करूणेश्वर महादेव का नाम जपने से जीवन की उलझनें दूर होती हैं। जल में चंदन और चावल शिवलिंग को अर्पित करने से वह जल अमृत बन जाता है। उन्होंने मंदोदरी की शिवभक्ति का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि उसकी भक्ति के बल से ही रावण की लंका खाक होने के बाद फिर वैसी ही हो गई।

चौथे साल की कथा मांगी, गूंजा जयघोष

यह कथा का तीसरा वर्ष था जो गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ। आयोजक दयासिंह ने व्यासपीठ से चौथे सावन की कथा की मांग की, जिस पर लाखों शिवभक्तों ने दोनों हाथ उठाकर जयघोष किया। पंडित मिश्रा ने कहा – महादेव चाहेंगे तो जरूर आएंगे। आयोजक दयासिंह ने शासन, प्रशासन, मीडिया और लगातार बारिश में भी पहुंचे श्रद्धालुओं का आभार माना। रविवार को ऐतिहासिक भीड़ रही।

महादेव की कृपा से खुशहाल और समृद्ध है छत्तीसगढ़ – मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अपनी धर्मपत्नी कौशिल्या देवी साय के साथ कथा श्रवण करने पहुंचे। उन्होंने व्यासपीठ की पूजा कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सौभाग्य है कि माता कौशल्या की जन्मभूमि और प्रभु श्रीराम के ननिहाल छत्तीसगढ़ की इस्पात नगरी भिलाई में सात दिनों से शिवभक्ति की अविरल धारा बह रही है। भगवान भोलेनाथ प्रदेश के चारों दिशाओं में विराजमान हैं – रायपुर में हटकेश्वर, कवर्धा में भोरमदेव, राजिम में कुलेश्वर, गरियाबंद में भूतेश्वर, सिरपुर में गंधेश्वर, जशपुर में मधेश्वर। उनके आशीर्वाद से प्रदेश में खुशहाली है।

उन्होंने कहा कि सरकार पांच शक्तिपीठों – कुदरगढ़ी, चंद्रहासिनी, महामाया, बम्लेश्वरी और दंतेश्वरी को चारधाम तर्ज पर विकसित कर रही है। रामलला अयोध्या धाम दर्शन योजना से 50 हजार से अधिक लोग दर्शन कर चुके हैं और मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत 19 तीर्थों की यात्रा कराई जा रही है। मुख्यमंत्री ने पंडित प्रदीप मिश्रा का स्वागत किया और आयोजक दयासिंह को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए बधाई दी।

मंदिर परिसर में भाजपा पदाधिकारियों में हुई भिड़ंत, दोनों पक्ष थाने पहुंचे

नई दृष्टिबिंदु / रतनपुर–बिलासपुर

रतनपुर के मां महामाया मंदिर गेट के पास भाजपा से जुड़े दो पक्षों के बीच चोरी के पुराने विवाद को लेकर मारपीट हो गई। दोनों पक्षों ने थाने में एक–दूसरे के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

प्रसाद विक्रेता तुषार पटेल के अनुसार, एक सप्ताह पहले दुकान से सामान चोरी हुआ था। शनिवार दोपहर करीब 2:30 बजे मंदिर गेट के पास दुकान के कर्मचारी को देखकर पूछताछ करने पर कहासुनी शुरू हुई। आरोप है कि भाजपा महिला मोर्चा अल्पसंख्यक मंडल मंत्री रेहाना बेगम, भागवत उर्फ रिहान, शेरू और मोन्टी ने मारपीट और जान से मारने की धमकी दी।

वहीं रेहाना बेगम ने शिकायत में आरोप लगाया कि फोन पर विवाद की सूचना पर वह मौके पर पहुंची थीं, जहां राजा पटेल, मेघा पटेल, ईश्वर प्रधान और राजू शर्मा ने उनके साथ बाल पकड़कर मारपीट की। दोनों पक्षों की शिकायत पर पुलिस जांच कर रही है। वहीं भाजपा महिला मोर्चा की मंडल महामंत्री द्वारा वीडियो वायरल किए जाने की चर्चा से पार्टी के अंदर की खींचतान भी सामने आ रही है।

राजधानी रायपुर में दो जगह चाकूबाजी, दो युवकों की मौत

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजधानी में दो अलग–अलग स्थानों पर चाकूबाजी की घटनाओं में दो युवकों की मौत हो गई। पुलिस ने एक मामले में हत्या का अपराध दर्ज किया है, वहीं दूसरे मामले में 5 आरोपियों को हिरासत में लिया है।

पहली घटना: डीडी नगर

थाना डीडी नगर क्षेत्र में महादेव घाट रोड पर गणेश मंदिर के पास देर रात विवाद के बाद चाकूबाजी हो गई। निषाद पारा रायपुरा निवासी कैलाश निषाद (20) अपनी महिला मित्र के साथ पैदल घर जा रहा था। तभी स्कूटी सवार टीकेंद्र देवांगन (20) पिता केतराम देवांगन, निवासी चंगोराभाटा ने उसे रोककर बिना बातचीत चाकू से हमला कर दिया।

बचाव में कैलाश ने चाकू छीनकर टीकेंद्र पर वार कर दिया, जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई। घायल कैलाश को एम्स में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने हत्या का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना शुरू कर दी है।

दूसरी घटना: चंगोराभाठा

दूसरी घटना 23 अगस्त की मध्यरात्रि करीब 12:30 बजे श्रीराम नगर, चंगोराभाठा में हुई। मृतक भोला विश्वकर्मा (20) का स्थानीय युवकों से विवाद हुआ, जिसके बाद आरोपियों ने चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। गंभीर घायल भोला की मेकाहारा में इलाज के दौरान मौत हो गई।

पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें 2 अपचारी बालक शामिल हैं। अन्य फरार आरोपियों की तलाश में टीम रवाना की गई है। मामले में बीएनएस की धारा हत्या और बलवा के तहत अपराध दर्ज किया गया है।

तस्वीरों ने ताजा कीं मुख्यमंत्री साय की पुरानी यादें

'दृश्य संवाद 2026' के समापन में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय हुए शामिल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय रायपुर प्रेस क्लब द्वारा विश्व फोटोग्राफी दिवस पर आयोजित पांच दिवसीय फोटो जर्नलिस्ट फेस्ट 'दृश्य संवाद 2026' के समापन समारोह में शामिल हुए। 19 अगस्त से शुरू हुए फेस्ट में मुख्यमंत्री ने फोटो प्रदर्शनी का अवलोकन किया। अपनी वर्षों पुरानी तस्वीरें देखकर उन्होंने पुरानी यादें साझा कीं। पहली बार विधायक बनने की तस्वीर देखकर उन्होंने बताया कि उस समय उन्होंने विशेष रूप से सफारी सूट सिलवाया था। खेत में हल चलाते हुए तस्वीर देखकर उन्होंने गांव और खेती–किसानी से जुड़े अनुभव भी साझा किए।

प्रदर्शनी के दौरान मुख्यमंत्री ने खुद कैमरा थामकर एक फोटो पत्रकार की तस्वीर खींची, जो समारोह का खास आकर्षण रहा। मुख्यमंत्री ने कहा कि तस्वीरें समय, समाज और स्मृतियों को सहेजती हैं। कई बार एक तस्वीर बिना शब्दों के पूरी कहानी कह देती है। फोटो पत्रकार कठिन परिस्थितियों में भी महत्वपूर्ण क्षणों को दर्ज करते हैं।

प्रदर्शनी में प्रकृति, संस्कृति, परंपरा और जनसरोकार विषयों पर छत्तीसगढ़ के विविध रंगों को दर्शाती तस्वीरें प्रदर्शित की गईं। समापन पर प्रेस क्लब अध्यक्ष मोहन तिवारी, महासचिव गौरव शर्मा सहित बड़ी संख्या में फोटो जर्नलिस्ट उपस्थित रहे।

ग्राम खट्टी में 4 सितंबर को कृष्ण जन्मोत्सव, सत्यनारायण मंदिर में होगी रामायण कथा

नई दृष्टिबिंदु / महासमुंद

ग्राम खट्टी स्थित श्री सत्यनारायण मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर 4 सितंबर 2026, शुक्रवार को कृष्ण जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाएगा।

मंदिर के पुजारी पं. सुभाष शर्मा, ओंकार प्रसाद शर्मा, पं. करण तिवारी, अर्जुन तिवारी, खुशबू उपाध्याय, खुशी उपाध्याय एवं मोतीलाल तिवारी ने बताया कि जन्मोत्सव पर विविध मानस परिवारों द्वारा रामायण पाठ किया जाएगा।

कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा

– शाम 06 बजे से रात्रि 08 बजे तक – श्री राम संगवारी मानस परिवार, खट्टी (देवकुमार साहू)
– रात्रि 08 बजे से 10 बजे तक – जय गणेश मानस मंडली, खट्टी (डोमन कुमार निषाद)
– रात्रि 10 बजे से 12 बजे तक – श्री मानसरोवर मानस परिवार, खट्टी (गोवर्धन यादव)

रात्रि 12 बजे कृष्ण जन्म के पश्चात प्रसाद वितरण किया जाएगा।

नराकास, भिलाई-दुर्ग के सदस्य संस्थानों ने राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन में सदैव उत्कृष्ट भूमिका निभाई

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 63वीं छमाही बैठक व वार्षिक पुरस्कार समारोह संपन्न

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), भिलाई-दुर्ग की 63वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन गुरुवार को भिलाई निवास के बहुउद्देशीय सभागार, सिविक सेंटर में संपन्न हुआ। कार्यक्रम कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) भिलाई इस्पात संयंत्र एवं कार्यकारी अध्यक्ष नराकास पवन कुमार के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में महाप्रबंधक प्रभारी (संपर्क, प्रशासन एवं जनसंपर्क) अमूल्य प्रियदर्शी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। स्वागत उद्बोधन में राघवेन्द्र कुमार गर्ग ने कहा कि नराकास, भिलाई-दुर्ग के सदस्य संस्थानों ने राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन में सदैव उत्कृष्ट भूमिका निभाई है, जिसके चलते समिति को लगातार प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं। बैठक में विगत बैठक के अनुपालन प्रतिवेदन और आगामी तिमाही की कार्यसूची पर चर्चा कर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

मुख्य अतिथि पवन कुमार ने नराकास, भिलाई-दुर्ग को वर्ष 2025-26 के लिए सर्वश्रेष्ठ श्रेणी में नराकास प्रोत्साहन सम्मान घोषित होने पर बधाई दी और कहा कि यह सम्मान सभी संस्थानों के सामूहिक प्रयासों और हिंदी के प्रति समर्पण का परिणाम है। विशिष्ट अतिथि श्री अमूल्य प्रियदर्शी ने भी सम्मान के लिए बधाई देते हुए इसे निरंतर बनाए रखने का आह्वान किया।

इस अवसर पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य) भोपाल के उप निदेशक नरेन्द्र सिंह मेहरा द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन किया गया। समारोह में विभिन्न संस्थानों को अग्रगण्य, अग्रदूत, ध्वजवाहक एवं आरोहण पुरस्कार तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों को राजभाषा विशिष्ट सेवा सम्मान प्रदान किया गया। भिलाई इस्पात संयंत्र को राजभाषा शिखर पुरस्कार और एचएससीएल की राजभाषा अधिकारी सुश्री वंदना चौधरी को राजभाषा उन्नायक सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन उप प्रबंधक (राजभाषा) जितेन्द्र दास मानिकपुरी ने किया और आभार सुश्री वंदना चौधरी ने व्यक्त किया। बैठक में भिलाई-दुर्ग के 49 सदस्य संस्थानों के प्रमुख, हिंदी अधिकारी और सम्मानित कार्मिक उपस्थित रहे।

खास खबर

संस्कृत, संस्कृति और संस्कार के संकल्प के साथ संपन्न हुआ संस्कृत महोत्सव

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

संस्कृत को संस्कृति और जीवन मूल्यों की भाषा के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से संस्कृत मित्र मंडल, भिलाई-दुर्ग द्वारा संस्कृत महोत्सव का आयोजन किया गया। शहर के 25 विद्यालयों के 234 विद्यार्थियों ने भाग लिया और सम्मानित हुए। महोत्सव में संस्कृत समूह गीत, ग्रीटिंग कार्ड, पोस्टर, सुलेख और 'ईश्वर एक नाम अनेक' प्रतियोगिताएं हुईं। विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत में तैयार ग्रीटिंग कार्ड और पोस्टर आकर्षण का केंद्र रहे।

समूह गीत प्रतियोगिता परिणामः प्रथमः एमजीएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर-6, द्वितीयः ज्योति हायर सेकेंडरी स्कूल, चरोदा, तृतीयः कृष्णा पब्लिक स्कूल, नेहरू नगर रहे। मुख्य वक्ता आचार्य डॉ. अजय आर्य ने कहा कि संस्कृत केवल विषय नहीं, जीवन मूल्यों को सिखाने वाली भाषा है। यह 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना देती है। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान जोगी राम साहू, साहित्यकार विजय कुमार गुप्ता, नीरज खरया विशिष्ट अतिथि रहे। अध्यक्ष आभा चौरसिया ने कहा कि संस्कृति को जीवंत रखने के लिए संस्कृत का संरक्षण जरूरी है।

आरएसएम में शिरोमणि पुरस्कार समारोह, 4 कर्मियों को मिला सम्मान

भिलाई। भिलाई इस्पात संयंत्र के रेल एवं स्ट्रक्चरल मिल में शिरोमणि पुरस्कार योजना के तहत 4 कर्मियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार नवाचार, संसाधनों के बेहतर उपयोग और सुरक्षा मानकों के अनुरूप उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मियों को दिया जाता है। समारोह में जूनियर इंजीनियर प्रकाश चन्द्र पटेल, जूनियर इंजीनियर एसोसिएट लक्ष्मीकांत प्रसाद, इंजीनियर एसोसिएट राजेश शर्मा और जूनियर इंजीनियर एसोसिएट श्याम लाल को शिरोमणि पुरस्कार प्रदान किया गया। मुख्य महाप्रबंधक (आरएसएम) टी. दस्तीदार ने चयनित कर्मियों को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति-पत्र, जीवनसाथी के लिए प्रशंसा-पत्र और मिठाई कूपन देकर सम्मानित किया। उन्होंने सभी विजेताओं के समर्पण और योगदान की सराहना की। इस अवसर पर महाप्रबंधक एन.के. खरे, आर.के. राजधर, अरविन्द टंडन, प्रशांत खोंड, एम.के. साहू, दुर्जती सिन्हा और उप महाप्रबंधक सुनील कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

ठंडा समोसा बना खूनी संघर्ष का कारण, युवक पर जानलेवा हमला, दो आरोपी हुए गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

सुपेला के लक्ष्मी मार्केट में समोसा ठंडा होने की बात को लेकर हुए विवाद में युवक पर धारदार हथियार से प्राणघातक हमला करने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। घायल युवक का इलाज रायपुर एम्स में जारी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार 22 अगस्त रात 10 बजे आदर्श पारा निवासी हिमांशु लक्ष्मी मार्केट शिव मंदिर के पास बैठा था। मोहल्ले के योगेश्वर वर्मा उर्फ बिच्छू और मनीष नोनहारे उर्फ पीला भाउ वहां पहुंचे। हिमांशु के कहने पर शराब, समोसा और पानी लाया गया। रात 11:15 बजे शराब पीने के दौरान समोसा ठंडा होने की बात पर विवाद बढ़ गया और दोनों ने हिमांशु पर धारदार हथियार से लगातार वार कर दिया।

हमले में हिमांशु के सिर, गर्दन, पेट, पीठ और कमर में गंभीर चोटें आईं। डायल-112 से उसे सुपेला अस्पताल ले जाया गया, फिर जिला अस्पताल और बाद में एम्स रायपुर रेफर किया गया। मां अर्चना नेवारे की रिपोर्ट पर थाना सुपेला में अपराध क्रमांक 1227/2026 धारा 109(1), 3(5) BNS के तहत मामला दर्ज हुआ। पुलिस ने कृष्णा नगर में घेराबंदी कर योगेश्वर वर्मा (22) और मनीष नोनहारे (25) को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा।

शिव महापुराण में साइबर जागरूकता अभियान को मिला जनसमर्थन, CM ने किया आह्वान

छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा 15 अगस्त से 2 अक्टूबर तक चलाए जा रहे साइबर जागरूकता अभियान को दुर्ग में आयोजित पंडित प्रदीप मिश्रा के शिव महापुराण कार्यक्रम में व्यापक जनसमर्थन मिला। बड़ी संख्या में नागरिकों ने क्यूआर कोड स्कैन कर अभियान से जुड़ते हुए सेल्फी लेकर जागरूकता का संदेश दिया।

दुर्ग पुलिस ने कार्यक्रम स्थल पर नागरिकों को ऑनलाइन ठगी, OTP-पिन शेयरिंग, संदिग्ध लिंक और कॉल से बचाव के उपाय बताए। अभियान में मुख्यमंत्री ने भी लोगों से जुड़ने की अपील की और दुर्ग पुलिस के प्रयासों की सराहना की। नागरिकों ने स्वयं जागरूक रहने के साथ परिवार और परिचितों को भी अभियान से जोड़ने की प्रतिबद्धता जताई।

कृषि फार्म में चोरी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार, ग्राइंडर और टाइल्स कटर बरामद

दुर्ग। थाना मोहन नगर पुलिस ने कृषि फार्म से चोरी के मामले में 2 आरोपियों को गिरफ्तार कर चोरी की मशीनें बरामद की हैं। प्रार्थी गणेश सिंह निवासी दीपक नगर ने 2 फरवरी को शिकायत दर्ज कराई थी कि 1 फरवरी रात 10 बजे कृषि फार्म से ग्राइंडर मशीन, टाइल्स कटिंग मशीन, केबल तार और ट्रैक्टर बैटरी चोरी हो गई है। रिपोर्ट पर थाना मोहन नगर में अपराध क्रमांक 108/2026 धारा 303(2) BNS के तहत मामला दर्ज किया गया।

विवेचना के दौरान पुलिस ने पतासाजी कर रूपेश उर्फ बुटी सगमोगरी (20) और राहुल देवरश (20) दोनों निवासी अटल आवास उरला को 23 अगस्त को गिरफ्तार किया। उनके कब्जे से ग्राइंडर मशीन, टाइल्स कटिंग मशीन और केबल तार बरामद किया गया। दोनों आरोपियों को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

सेल निदेशक वाणिज्यिक टी.एन. नटराजन ने किया बीएसपी का दौरा उत्पादन प्रदर्शन की समीक्षा की

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल के निदेशक (वाणिज्यिक) टी.एन. नटराजन ने 22 अगस्त को भिलाई इस्पात संयंत्र का दौरा कर प्रमुख उत्पादन इकाइयों के प्रदर्शन की समीक्षा की। उन्होंने वायर रॉड मिल और यूनिवर्सल रेल मिल में उत्पादकता सुधार पर विशेष जोर दिया। निदेशक प्रभारी चित्तरंजन महापात्र ने पदभार के बाद पहली भिलाई यात्रा पर उनका स्वागत किया। दौरे की शुरुआत सेफ्टी एक्सीलेंस सेंटर में सुरक्षा निर्देशों से हुई। इसके बाद कार्यपालक निदेशक (वर्क्स) राकेश कुमार के साथ उन्होंने डब्ल्यूआरएम और यूआरएम का निरीक्षण किया। मुख्य महाप्रबंधक योगेश शास्त्री और शिशिर शुक्ला ने मिलों के संचालन की जानकारी दी।

सेक्टर-10 स्थित ओवरहेड वाटर टैंक के पास आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में निदेशक वाणिज्यिक ने पौधारोपण किया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक ए.के. चक्रवर्ती, प्रवीण निगम, पवन कुमार, पी.के. सरकार, राकेश कुमार, कमल भास्कर और अरुण कुमार सहित टाउन सर्विसेज के अधिकारी, कर्मचारी और बीएसपी स्कूलों के विद्यार्थी उपस्थित रहे। नटराजन ने कहा कि उपजाऊ मिट्टी, स्वच्छ वायु, स्वच्छ पेयजल और अच्छा स्वास्थ्य ही जीवन की वास्तविक संपदा है। भिलाई हरित और प्राकृतिक संपदा से समृद्ध है, इसके संरक्षण के लिए सभी को प्रोत्साहित करना चाहिए। निदेशक प्रभारी ने बताया कि बीएसपी प्रतिवर्ष लगभग एक लाख पौधे लगाता है।

बाद में इस्पात भवन में आयोजित मिल्स कलेक्टिव बैठक में नटराजन ने वरिष्ठ प्रबंधन के साथ WRM और URM के प्रदर्शन की व्यापक समीक्षा की। उन्होंने प्रत्यक्ष डिस्पैच, परिचालन दक्षता और बिक्री प्रदर्शन में सुधार पर जोर देते हुए महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय करने का आह्वान किया।

जी एच रायसोनी स्मृति स्कूल शतरंज स्पर्धा का शुभारंभ, संभाग के 164 छात्र ले रहे हिस्सा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ प्रदेश शतरंज संघ के निर्देशन में जिला शतरंज संघ दुर्ग द्वारा जी एच रायसोनी स्मृति संभाग स्तरीय स्कूल शतरंज स्पर्धा का शुभारंभ खालसा पब्लिक स्कूल के सभागार में हुआ। खालसा एजुकेशन सोसायटी के चेयरमैन त्रिलोक सिंग ढिल्लन ने शतरंज की चाल चलकर स्पर्धा का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि दिमागी कौशल बढ़ाने का सशक्त माध्यम शतरंज है। मोबाइल छोड़कर बच्चे स्पर्धा में आए हैं, यह सराहनीय है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी कैलाश जैन बरमेचा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में कुलवीर सिंग सलूजा, सुरेंद्र सिंग कबरवाल, बलबीर सिंग अरोरा और इंटरनेशनल आर्बिटर रॉकी देवांगन उपस्थित रहे। जिला शतरंज संघ के अध्यक्ष ईश्वर सिंह राजपूत और सचिव तुलसी सोनी ने बताया कि यह स्पर्धा रायसोनी स्पोर्ट्स एवं कल्चर फाउंडेशन और कल्पना प्रकाश वेलफेयर फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित की गई है। स्पर्धा में दुर्ग संभाग के 164 स्कूली छात्र भाग ले रहे हैं। कुल 50 हजार रुपये नगद, 56 ट्रॉफी और सभी प्रतिभागियों को मेडल व ई-सर्टिफिकेट प्रदान किए जाएंगे।

विधायक चंद्राकर ने रिसाली को दी 1.01 करोड़ की सौगात

विधायक ललित चंद्राकर ने वार्ड 29-30 में किया भूमिपूजन कर रखी आधारशिला

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई-रिसाली

दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने रिसाली नगर निगम के वार्ड 29 और 30 में कुल 1.01 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का भूमिपूजन कर आधारशिला रखी। विधायक ने वार्ड 30 इस्पात नगर साई मंदिर परिसर में 39.32 लाख रुपये की लागत से सी.सी. रोड, नाली निर्माण, कवर ड्रेन और सौंदर्यीकरण कार्यों तथा वार्ड 29 लक्ष्मी नगर रिसाली भाठा में 62.14 लाख रुपये की लागत से डोम शेड, सड़क चौड़ीकरण, फ्रेड नाली, सी.सी. रोड, सामुदायिक भवन और सौंदर्यीकरण कार्यों का शुभारंभ विधिवत पूजा-अर्चना के साथ किया।

इस अवसर पर विधायक ने कहा कि डबल इंजन सरकार हर क्षेत्र के विकास के लिए संकल्पित है और रिसाली के विकास के लिए धन की कमी नहीं आने दी जाएगी। जनता की प्राथमिकता वाले कार्य पहले पूर्ण किए जाएंगे। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष अनुपम साहू, राजू जंघेल, नेता प्रतिपक्ष शैलेन्द्र साहू, पार्षद विलास बोरकर, धर्मेन्द्र भगत, सीमा साहू सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि और वार्डवासी उपस्थित रहे।

आयुक्त सुरुचि सिंह ने किया नेहरू नगर SLRM सेंटर का निरीक्षण, सी & डी वेस्ट प्लांट शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई आयुक्त सुरुचि सिंह ने नेहरू नगर स्थित SLRM सेंटर का निरीक्षण किया। उन्होंने परिसर में निमार्णाधीन C&D (कंस्ट्रक्शन एंड डिमोलिशन) वेस्ट प्लांट के कार्यों का जायजा लेकर गुणवत्ता बनाए रखते हुए कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए।

आयुक्त ने कहा कि निर्माण कार्य में गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए और कार्य समय-सीमा में पूरा किया जाए। उन्होंने कचरा सेग्रीगेशन (गीला-सूखा एवं अन्य श्रेणियों में अपशिष्ट पृथक्करण) कार्यों का भी अवलोकन किया और व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने को कहा। साथ ही SLRM सेंटर में कार्यरत कर्मचारियों की उपस्थिति व्यवस्था को हाईटेक कर नियमित और पारदर्शी निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान जोन आयुक्त डी.के. कोसरिया, कार्यपालन अभियंता सुनील जैन, नितेश मेश्राम, स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, सहायक अभियंता श्वेता वर्मा, उप अभियंता पुरुषोत्तम सिन्हा, अशोक देवांगन, आशीष भारती, स्वच्छता निरीक्षक कमलेश द्विवेदी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

11 हजार से अधिक बहनों ने बांधा विधायक रिकेश को रक्षा सूत्र, लोकांगन में उमड़ा स्नेह का सैलाब

अल्प सूचना पर उमड़ी बहनों की भीड़, दोपहर से शाम तक रक्षासूत्र बंधवाते रहे विधायक सेन — लोकांगन से गरबा ग्राउंड तक कतारों में दिखा भाई-बहन के प्रेम का अद्भुत नजारा

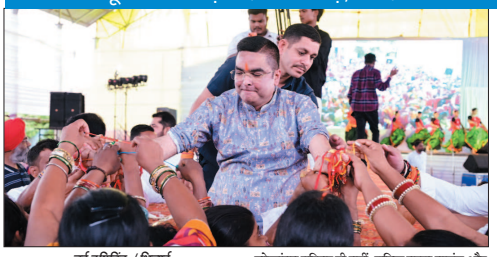

नई दृष्टिबिंद / भिलाई

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर वैशाली नगर विधानसभा में भाई-बहन के प्रेम, विश्वास और आत्मीय रिश्ते की अनूठी तस्वीर देखने को मिली। वैशाली नगर स्थित लोकांगन परिसर में रविवार को 11 हजार से अधिक बहनें अपने विधायक भाई रिकेश सेन को रक्षासूत्र बांधने पहुंचीं। अल्प सूचना पर इतनी बड़ी संख्या में बहनों के पहुंचने से लोकांगन परिसर ही नहीं, बल्कि गरबा ग्राउंड और आसपास का क्षेत्र भी बहनों की कतारों से भर गया।

रविवार की सुबह से ही बहनों का लोकांगन पहुंचना शुरू हो गया था। बीती रात विधायक रिकेश सेन के वीडियो संदेश के बाद महज कुछ घंटों के भीतर बड़ी संख्या में बहनें उन्हें राखी बांधने पहुंच गईं। आयोजन में रखी गई कुर्सियां कम पड़ गईं और दोपहर से शाम तक बहनें अपनी बारी का इंतजार करती नजर आईं। दोपहर 1 बजे से शाम 6 बजे तक विधायक सेन लगातार बहनों से रक्षासूत्र बंधवाते रहे।

व्यवस्था को लेकर भी विधायक स्वयं सक्रिय नजर आए। लोकांगन के हर हिस्से में पहुंचकर उन्होंने बहनों से मुलाकात की और उन्हें भरोसा दिलाया कि कोई भी बहन निराश होकर नहीं लौटेगी। उन्होंने कहा कि पार्षद से लेकर विधायक बनने तक वैशाली नगर की बहनों ने जिस आत्मीयता से उन्हें अपना भाई मानकर स्नेह और आशीर्वाद दिया है, उस रिश्ते का मान रखना उनका दायित्व है। उन्होंने कहा कि जो बहनें आज उनसे नहीं मिल पाईं, उनके लिए भी अगले एक सप्ताह तक उपलब्ध रहने का प्रयास करेंगे।

रक्षाबंधन के इस आयोजन में बहनों ने अपने विधायक भाई का तिलक किया, आरती उतारी और रक्षासूत्र बांधकर उनकी दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना की। भाई को राखी बांधने के बाद सैकड़ों बहनों ने विधायक की धर्मपत्नी डॉ. रिचा सेन को भी रक्षा सूत्र बांधा।

ढाई दशक पुराना रिश्ता, हर वर्ष बढ़ता गया स्नेह

गौरतलब है कि विधायक रिकेश सेन का बहनों से रक्षाबंधन का यह आत्मीय रिश्ता कोई नया नहीं है। पिछले करीब ढाई दशक से वे हर वर्ष रक्षाबंधन के सप्ताह भर पूर्व से ही बहनों से राखी बंधवाते आ रहे हैं। इस दौरान वे परंपरा के अनुरूप बहनों को उपहार भी देते रहे हैं। समय के साथ यह आयोजन लगातार व्यापक होता गया और रक्षासूत्र बांधने पहुंचने वाली बहनों की संख्या भी बढ़ती गई।

पिछले वर्ष वैशाली नगर विधानसभा में घरेलू कामकाज करने वाली महिलाओं के लिए शुरू की गई झशक्ति योजनाह्न के बाद इस आत्मीय रिश्ते का दायरा और बढ़ा। योजना से जुड़ी 22 हजार महिलाओं ने भी विधायक को अपना भाई मानकर रक्षाबंधन पर उन्हें राखी बांधनी शुरू की। यही वजह रही कि पिछले वर्ष भी सप्ताह भर तक बड़ी संख्या में बहनें विधायक से राखी बंधवाने और उन्हें राखी बांधने पहुंचती रहीं।

आपका आशीर्वाद ही मेरी शक्ति

विधायक रिकेश सेन ने बहनों के इस अपार स्नेह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वैशाली नगर की हजारों बहनों का आशीर्वाद ही उन्हें जनता की सेवा के लिए निरंतर प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि इसी शक्ति और विश्वास के बल पर विधानसभा क्षेत्र में दो दर्जन से अधिक जनोपयोगी योजनाएं शुरू की गई हैं, जिनका सीधा लाभ क्षेत्र की जनता को मिल रहा है।

उन्होंने बहनों से अपील की कि वे इसी तरह अपना स्नेह और आशीर्वाद बनाए रखें तथा ईश्वर से उनके स्वस्थ रहने की प्रार्थना करें, ताकि वे आगे भी वैशाली नगर की जनता के लिए नई और जनोपयोगी योजनाएं शुरू करते हुए निरंतर सेवा कर सकें। लोकांगन में उमड़ी हजारों बहनों की भीड़ ने रक्षाबंधन को महज एक पर्व नहीं, बल्कि जनप्रतिनिधि और जनता के बीच बने आत्मीय पारिवारिक रिश्ते के उत्सव में बदल दिया। अल्प सूचना पर उमड़ा यह स्नेह-सैलाब पूरे दिन वैशाली नगर भिलाई में चर्चा का विषय बना रहा।

खास खबर

फर्जी ट्रांसफर आदेश मामले में अब तक 6 गिरफ्तार, जेल जाने से पहले दो आरोपी डॉक्टर अस्पताल में भर्ती

नई दृष्टिबिंदु / बलौदाबाजार

स्वास्थ्य विभाग में फर्जी स्थानांतरण आदेश तैयार कर धोखाधड़ी करने के मामले में बलौदाबाजार-भाटापारा पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। पलारी थाना में दर्ज अपराध क्रमांक 347/2026 के तहत अब तक कुल 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस के अनुसार मामले में धारा 318(4), 336(3), 337, 338, 340(2) और 3(5) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज किया गया है। पुलिस ने 22 अगस्त को इस मामले में ग्रामीण चिकित्सा सहायक सहित चार आरोपियों को गिरफ्तार किया था, जिनमें डॉक्टर करण देवांगन और डॉक्टर राजेश सेन शामिल हैं।

गिरफ्तारी के बाद मेडिकल जांच के लिए ले जाने पर दोनों डॉक्टरों ने पेट दर्द और दस्त की शिकायत की। पलारी अस्पताल की रिपोर्ट के आधार पर दोनों को जिला अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। इसको लेकर शहर में चर्चाएं शुरू हो गई हैं कि सामान्य स्थिति में आरोपियों को जेल भेजा जाता है, लेकिन इस मामले में आरोपी खुद मरीज बन गए। जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डॉ. अशोक वर्मा ने बताया कि पलारी अस्पताल की मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर भर्ती किया गया था। अब दोनों की स्थिति ठीक है और उन्हें कोर्ट में पेश किया जा सकता है।

इसी मामले में विवेचना आगे बढ़ाते हुए पलारी पुलिस ने रविवार को दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी परख कश्यप पिता महेंद्र कुमार कश्यप (36) निवासी सिविल लाइन बलौदाबाजार और प्रणव अवस्थी पिता कृष्णा अवस्थी (30) निवासी ग्राम रिसदा, गांधी चौक को न्यायालय में पेश करने की प्रक्रिया जारी है। एसपी गौरव राय के मार्गदर्शन में पुलिस पूरे नेटवर्क, फर्जी दस्तावेज तैयार करने की प्रक्रिया और अन्य लोगों की भूमिका की जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि विवेचना के दौरान सामने आए तथ्यों के आधार पर आगे भी कार्रवाई की जाएगी।

नाबालिग से दुष्कर्म और नवजात बिक्री मामले में एक और आरोपी गिरफ्तार, अब तक 9 गिरफ्तार

रायपुर। नाबालिग से दुष्कर्म कर गर्भवती करने, फर्जी दस्तावेजों से प्रसव कराने और नवजात की बिक्री के मामले में रायपुर पुलिस ने एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसके साथ ही इस प्रकरण में गिरफ्तार आरोपियों की संख्या 9 हो गई है। न्यू राजेंद्र नगर थाना में अपराध क्रमांक 289/2026 के तहत बीएनएस, पॉक्सो एक्ट और जे.जे. एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज है। पुलिस ने पूर्व में 8 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

विवेचना के दौरान सामने आया कि महिला आरोपी पूनम सागरिया ने पीड़िता की आयु अधिक दिखाने और नाम बदलने के लिए फर्जी आधार कार्ड बनवाया था। उसने पीड़िता का आधार कार्ड दलदल सिवनी निवासी पिंटू सिंह को दिया था। पूछताछ में पिंटू सिंह ने स्वीकार किया कि उसने मोबाइल ऐप के माध्यम से पीड़िता के आधार कार्ड में नाम परिवर्तन कर आयु बढ़ाकर फर्जी आधार कार्ड तैयार किया और पूनम सागरिया को दे दिया। पुलिस ने आरोपी पिंटू सिंह (30) निवासी द्वारिका विहार, शिव मंदिर के पास, दलदल सिवनी, थाना मोवा-पंडरी को गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त मोबाइल फोन जब्त किया है। डीसीपी वेस्ट जोन के निर्देशन में थाना न्यू राजेंद्र नगर पुलिस मामले की आगे जांच कर रही है।

तिहारू भी जान गया है, क्या है सुराज

सुशासन तिहार - जनविश्वास, जनकल्याण और विकास की नई पहचान

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

सुशासन तिहार छत्तीसगढ़ शासन की एक संवेदनशील पहल है, जिसका उद्देश्य गाँवों और शहरों के द्वार पर पहुंचकर आम जनता की समस्याओं का समयबद्ध समाधान करना और शासन-प्रशासन के प्रति जनविश्वास को मजबूत करना है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में गत माह आयोजित इस अभियान के तहत जनता से सीधे संवाद और विकास कार्यों को गति दी जाती है। अधिक जानकारी के लिए छत्तीसगढ़ शासन पोर्टल पर जा सकते हैं।

बस्तर का आयतु हो या सरगुजा जिले का तिहारू, धमतरी जिले के आदिवासी बहुल नगरी अंचल के ईतवारी राम कमार अपनी बात बेबाकी से प्रदेश के मुखिया विष्णु देव साय के समक्ष खड़े होकर कह सकता है कि साहब हमारे यहां पीडीएस यानी सरकारी उचित मूल्य की दुकान का अनाज एवं अन्य खाद्यान सामग्री किफायती दर पर और सही समय पर मिल रहा है अथवा नहीं ? सुशासन जो कि गुड गवर्नेंस कहने पर आसानी से लोगों के जहन में बसता है इसका वास्तविक अर्थ है ऐसा शासन जो लोक-केंद्रित हो, पारदर्शी हो और जिसमें जनता की आवाज सर्वोपरि हो।

पिछले दिनों सफलता पूर्वक सम्पन्न सुशासन तिहार के दौरान मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने औचक ग्रामीणों के बीच पहुँचकर सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति का जायजा लिया। सुशासन का वास्तविक अर्थ केवल योजनाओं की घोषणा करना नहीं, बल्कि शासन को इस प्रकार संवेदनशील, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाना है कि उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहजता से पहुंचे। सुशासन तिहार इसी सोच का जीवंत उदाहरण है। इसी मंशा से प्रदेश के सुदूरवर्ती इलाकों के लोगों ने भी गाँव की चौपाल में अपने मुखिया के समक्ष विभिन्न सार्वजनिक जरूरतों के बारे में प्रमुखता से अपनी बात रखी। चाहे वह हेण्डपम्प की हो या तालाब में घाट का निर्माण, सामुदायिक भवन, आंगनबाडी भवन, पहुंचमार्ग का निर्माण अथवा विद्युत लाईन का विस्तार, मध्यान्ह भोजन की बात हो या स्कूलों में शिक्षकों की नियमित उपस्थिति के संबंध में अपनी बातें रखीं।

सुशासन तिहार के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में 15 से 20 ग्राम पंचायतों के समूह और शहरी क्षेत्रों में वार्ड क्लस्टर स्तर पर शिविर का आयोजन हुआ। मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों की छोटी-छोटी सार्वजनिक जरूरतों को मौके पर ही तुरन्त अपनी मंजूरी प्रदान की। गांव वालों के बीच हेलीकॉप्टर का अचानक उतरना लोगों के लिए कौतूहल का विषय होता है, उनके बीच प्रदेश के मुखिया उनके दुःख-दर्द का हालचाल जानने आए हैं, वह भी बैशाख-जेठ महिने की तपती दोपहरी में। मुख्यमंत्री को अपने बीच पाकर ग्रामीण भी सहज होकर आत्मीयता से अपनी बात रखते। मुख्यमंत्री भी उनकी सार्वजनिक जरूरतों की मांग को मौके पर ही पूरा कर देते। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में गांव, गरीब और किसानों की विभिन्न समस्याओं का यथा संभव तुरन्त समाधान करने इस वर्ष पूरे प्रदेश में 01 मई से 10 जून 2026 तक सुशासन तिहार संचालित किया गया।

छत्तीसगढ़ में सरकार और जनता के बीच परस्पर संवाद के एक प्रभावी माध्यम के रूप में सुशासन तिहार संचालित हुआ जो सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। इस वर्ष भी प्रदेश के सभी 33 जिलों के 146 विकासखण्डों में शासकीय अधिकारियों-कर्मचारियों के अभियान दलों का गठन कर उन्हें गांवों में भेजा गया। राज्य में कुल 11 हजार 693 ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत गांव की संख्या 19 हजार 820 के आसपास हैं। अभियान के तहत विभिन्न विभागों के हजारों अधिकारी और कर्मचारी अलग-अलग जत्थों में पैदल भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने गांवों में रात रूक कर ग्रामीणों से चौपाल में उनकी समस्याओं तथा जरूरतों की जानकारी भी ली। त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों ने भी इस अभियान में भाग लिया। मुख्यमंत्री और सभी जिलों के प्रभारी मंत्रियों तथा प्रभारी सचिवों ने इस दौरान विभिन्न जिलों के गांवों का आकस्मिक दौरा किया।

मुख्यमंत्री साय ने भगवान शिव का रुद्राभिषेक कर प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

पवित्र श्रावण मास में राजधानी रायपुर आज भगवान भोलेनाथ की भक्ति में सराबोर नजर आई। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय गुढ़ियारी स्थित मारुति मंगलम परिसर में आयोजित भव्य कांवड़ यात्रा में शामिल हुए। मुख्यमंत्री श्री साय ने भगवान शिव का विधि-विधान से रुद्राभिषेक एवं पूजा-अर्चना कर छत्तीसगढ़ की सुख-समृद्धि, शांति, खुशहाली और प्रदेशवासियों के कल्याण की कामना की। उन्होंने कांवड़ यात्रा में शामिल शिवभक्तों का उत्साहवर्धन करते हुए सभी को पवित्र श्रावण मास की शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सावन का महीना भगवान शिव की आराधना और भक्ति का विशेष अवसर है। इस पवित्र माह में कांवड़ यात्रा हमारी आस्था, भक्ति और समर्पण की अनुपम अभिव्यक्ति है। हजारों शिवभक्त पवित्र जल लेकर भगवान भोलेनाथ के अभिषेक के लिए पैदल निकलते हैं। कठिन यात्रा के बीच शिवभक्तों का उत्साह और श्रद्धा सनातन संस्कृति में निहित आस्था की शक्ति को प्रकट करती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गुढ़ियारी के मारुति मंगलम परिसर से हजारों कांवड़िए पवित्र जल लेकर महादेव घाट स्थित भगवान हटकेश्वरनाथ महादेव के जलाभिषेक के लिए रवाना हुए हैं। शिवभक्तों के जयघोष और भक्ति से पूरा वातावरण शिवमय हो उठा है। यह आयोजन केवल धार्मिक यात्रा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और सामाजिक एकता का उत्सव भी है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने भगवान हटकेश्वरनाथ महादेव मंदिर के ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि यह मंदिर छत्तीसगढ़ की प्राचीन शिव आराधना परंपरा का प्रमुख केंद्र है। महादेव घाट में विराजमान भगवान हटकेश्वरनाथ के प्रति प्रदेशवासियों की गहरी आस्था है। विशेष रूप से श्रावण मास में बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंचकर भगवान शिव का जलाभिषेक एवं पूजा-अर्चना करते हैं।

मानव आश्रम सेक्टर-1 में रिमझिम सावन में सावन तीज महोत्सव मनाया

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

कान्यकुब्ज सामाजिक चेतना मंच मानव आश्रम सेक्टर 1 भिलाई दुर्ग के सभागार में कान्यकुब्ज समाज कार्यकारिणी की महिलाओं एवं समाज की महिलाओं ने बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक सावन तीज महोत्सव मनाया। विभिन्न रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों से सुसज्जित महिलाओं से सामाजिक समरसता, संस्कृति संस्कार स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती रही।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सुधा शुक्ला जी , कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सुशीला दीक्षित जी के सानिध्य में साथ ही प्रतिस्पधाओं में निर्णायक श्रीमती विजया मिश्रा, श्रीमती प्रीति मिश्रा की गरिमामय उपस्थिति में शुभारंभ किया। विभिन्न श्रेणियों की , मनभावन प्रस्तुतियां , प्रतियोगिताओं से परिपूर्ण कार्यक्रम की प्रभारी श्रीमती रमा अग्निहोत्री, श्रीमती ज्योति तिवारी एवं सुचारू रूप से संचालित करने में मुख्य रूप से श्रीमती वंदना पाण्डेय, श्रीमती रश्माला तिवारी जी की अथक मेहनत परिलक्षित होती रही।

विभिन्न श्रेणियों की प्रतियोगिता में मेंहदी प्रतियोगिता में श्रीमती प्रीति मिश्रा , आल्ता में श्रीमती श्रद्धा मिश्रा,केश सज्जा में श्रीमती जाग्रति शुक्ला, आकर्षित पायजेब में श्रीमती रोशनी मिश्रा, आकस्मिक एवं आश्चर्यजनक प्रतियोगिता अनमैच वस्त्र में श्रीमती कल्पना शुक्ला, हरे रंग की साड़ी में श्रीमती वैशाली दीक्षित ने विजय श्री प्राप्त किया ।

नृत्य प्रस्तुतियों में प्रथम श्रीमती विभा मिश्रा, द्वितीय श्रीमती रोली शुक्ला, तृतीय श्रीमती नम्रता दीक्षित, कर्ण प्रिय संगीत गायन में प्रथम श्रीमती मुक्ता मिश्रा, द्वितीय श्रीमती प्रिया तिवारी, तृतीय श्रीमती समता शुक्ला, भाग्यशाली प्रतियोगिता में प्रथम श्रीमती मनोरमा बाजपेई, द्वितीय श्रीमती सुनीता विजय तिवारी, ने विजय श्री प्राप्त किया।

एकल नृत्य में श्रीमती दिव्या शुक्ला, श्रीमती श्रद्धा मिश्रा, श्रीमती श्वेता मिश्रा ने एवं सामूहिक नृत्य में श्रीमती सोनम, श्रीमती पूजा अवस्थी, श्रीमती शांता पाण्डेय, श्रीमती विद्या तिवारी ने बहुत ही आकर्षक प्रस्तुति प्रस्तुत किया। इसमें सभी की दक्षता मेहनत की स्पष्ट झलक दिख रही थी। हवा-हवाई नाम मनोरंजक प्रतियोगिता में प्रथम अनुश्रुति तिवारी, द्वितीय श्रीमती शशि तिवारी, तृतीय श्रीमती आशा अवस्थी ने स्थान प्राप्त किया। सावन तीज महोत्सव के विशेष आकर्षण केन्द्र बिन्दु प्रतियोगिता सावन क्वीन में प्रथम श्रीमती विद्या तिवारी , द्वितीय श्रीमती सोनम दीक्षित, तृतीय श्रीमती श्रुति तिवारी ने स्थान प्राप्त किया।

कान्यकुब्ज सामाजिक चेतना मंच मानव आश्रम के अध्यक्ष उमाकांत दीक्षित, महासचिव रविन्द्र मिश्रा, उपाध्यक्ष आलोक शुक्ला, सांस्कृतिक सचिव राकेश कुमार शुक्ला, भवन भंडारण सचिव विजय तिवारी, कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सुशीला दीक्षित मुख्य अतिथि श्रीमती सुधा शुक्ला, निर्णायक श्रीमती विजया मिश्रा, श्रीमती प्रीति मिश्रा जी ने विजयी प्रतिस्पधीर्यों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया। जिन्होंने प्रतियोगिता में भाग लिया था उन्हें सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समाज की अनेक महिलाएं, युवतियों की सारगर्भित उपस्थिति रही।

इंटरस्टेट वाहन चोर गिरोह का पदार्फाश, 3 गिरफ्तार, 9 बाइक-स्कूटी जब्त

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

दोपहिया वाहन चोरी कर ओडिशा में बिक्री करने वाले अंतर्राज्यीय गिरोह के 3 सदस्यों को एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट ने गिरफ्तार किया है। इनके पास से 4 लाख रुपये कीमत की 9 चोरी की गाड़ियां जब्त की गई हैं। डीसीपी क्राइम एवं साइबर स्मृतिक राजनाला के निर्देशन में गठित विशेष टीम को 20 अगस्त को सूचना मिली थी कि कोतवाली क्षेत्र के मोतीबाग में एक व्यक्ति बिना कागजात के एक्टिवा बेचने आया है। टीम ने तेलीबांधा निवासी टोपेश्वर साहू उर्फ संजू को पकड़ा। पूछताछ में उसने रायपुर के विभिन्न थानों से 9 गाड़ियां चोरी करना कबूला।

उसकी निशानदेही पर टीम ने ओडिशा के भालुमुंडा से उसके साथी सुजल मेहेर उर्फ करण (19) और विधि से संघर्षरत एक बालक को पकड़ा। आरोपी चोरी की गाड़ियों की पहचान छिपाने के लिए उन पर ओडिशा पासिंग की फर्जी नंबर प्लेट लगा देते थे। जब्त 6 गाड़ियों में थाना कोतवाली में अपराध क्रमांक 342/26, 320/26,

आजाद चौक में 104/26, न्यू राजेंद्र नगर में 241/26, 251/26 और खम्हारडीह में 181/26 दर्ज है।

आरोपी टोपेश्वर शातिर वाहन चोर है, जो 2023 में 10 वाहन चोरी के मामले में जेल जा चुका है। तीनों की मुलाकात रायपुर के एक होटल में वेटर का काम करते हुए हुई थी।

सूने मकान में चोरी से पहले पकड़ाए तीन, पड़ोसी की सजगता से वारदात विफल

अमलीडीह के शिव विला कॉलोनी में सूने मकान में चोरी की कोशिश को न्यू राजेंद्र नगर पुलिस और डायल-112 की संयुक्त टीम ने विफल

कर दिया। पुलिस ने मौके से एक आरोपी और विधि से संघर्षरत 2 बालकों सहित तीन को रंगे हाथ पकड़ा है।

पुलिस के अनुसार 22-23 अगस्त की दरम्यानी रात सूचना मिली थी कि शिव विला कॉलोनी के एक सूने मकान में कुछ संदिग्ध व्यक्ति घुसे हैं। मकान मालकिन ताला लगाकर महासमुंद गई हुई थीं। पड़ोसी ने संदिग्ध गतिविधि देखकर तत्काल पुलिस को सूचना दी।

सूचना पर थाना न्यू राजेंद्र नगर और 112 की टीम मौके पर पहुंची और घेराबंदी कर घर के अंदर प्रवेश किया। आरोपी मुख्य दरवाजे और अलमारी का ताला तोड़कर चोरी की तैयारी में थे, तभी पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। प्रार्थिया की रिपोर्ट पर थाना न्यू राजेंद्र नगर में अपराध क्रमांक 296/2026, धारा 331(3), 305, 62 बीएनएस के तहत अपराध दर्ज किया गया है। गिरफ्तार आरोपी दीपक देवार (18) निवासी यादव होटल के सामने, अमलीडीह चौक का रहने वाला है। दो अन्य विधि से संघर्षरत बालक हैं।

यातायात जवानों को मिले 400 रेनकोट, पुलिस ने अस्पताल प्रबंधन का किया सम्मान

वर्षा ऋतु में भीगते हुए ड्यूटी करने वाले यातायात पुलिस के जवानों की सुविधा के लिए उमिला मेमोरियल हॉस्पिटल भांठागांव और NH MMI हॉस्पिटल पचपेड़ी नाका ने 200-200 रेनकोट उपलब्ध कराए हैं। इस सहयोग के लिए यातायात पुलिस ने शनिवार को सम्मान एवं आभार समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त अमित तुकाराम कांबले और डीसीपी ट्रैफिक डॉ. अर्चना झा ने दोनों अस्पतालों के प्रतिनिधियों और चिकित्सकों का सम्मान कर आभार व्यक्त किया। इस दौरान अस्पतालों द्वारा उपलब्ध कराए गए 400 रेनकोट यातायात जवानों को वितरित किए गए।

अधिकारियों ने कहा कि यातायात पुलिस के जवान वर्षा, धूप और प्रतिकूल मौसम में भी सड़क पर रहकर व्यवस्था संभालते हैं। अस्पतालों द्वारा दिए गए रेनकोट उनके कर्तव्य के प्रति सम्मान और सामाजिक सहभागिता का प्रतीक हैं। ऐसे सहयोग से जवानों का मनोबल बढ़ता है। समारोह में एडिशनल डीसीपी ट्रैफिक राम कुमार बर्मन, एसीपी ट्रैफिक रमेश यैरेवार, एसीपी कमलजीत पाटले, सतीश ठाकुर, सीमा अहिरवार सहित यातायात पुलिस के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

संपादकीय

व्यवस्था सुधार नहीं सकते तो निरीक्षण किसलिए स्कूल का

हर राज्य में सरकारी स्कूली शिक्षा व्यवस्था निरीक्षण करने का अधिकार सरकारी अधिकारियों को होता है। वह करते भी हैं ताकि जिन स्कूलों में शिक्षा के लिए जरूरी व्यवस्था नहीं है वहां जरूरी व्यवस्था की जा सके और बच्चों को शिक्षा में सुविधा हो। स्कूलों में शिक्षा का न्यूनतम स्तर कायम रहे। हर राज्य में अगर कोई स्कूली शिक्षा व्यवस्था में कमी तलाशने जाएगा तो शायद ही कोई राज्य ऐसा होगा जहां के किसी न किसी स्कूल में कोई जरूरी व्यवस्था न मिले ।किसी स्कूल का भवन नहीं होगा तो वह किसी किराए के भवन मे चल रहा होगा कई भवनों में दो पारी में स्कूल लग रहे होंगे, कई स्कूलों का अपना भवन होगा तो वह पुराना हो गया होगा,जर्जर हो गया होगा, मरम्मत की जरूरत हो मरम्मत तक नहीं हो पा रही होगी। बच्चों को समय पर गणवेश,किताबें नहीं मिलती हैं। कहीं एक ही शिक्षक मिलेगा। कहीं जरूरत से ज्यादा शिक्षक भी मिलेंगे ।शिक्षक होंगे तो समय पर स्कूल नहीं आते होंगे,स्कूल आते होंगे तो ठीक से पढ़ाते नहीं होंगे। कोई शराब पीकर स्कूल आ जाता है और पढ़ा नहीं पाता है, कोई स्कूल आता है तो ध्यान पढ़ाने में कम बच्चों को सुधारने में ज्यादा रहता है। स्कूल में किसी न किसी विषय का टीचर नहीं होगा।

चाहे भाजपा की सरकार रहे या कांग्रेस की सरकार रहे या किसी तीसरे दल की सरकार रहे सरकारी स्कूल हमेशा सरकारी स्कूल ही बने रहते हैं,वहां की व्यवस्था नहीं बदलती है ।कोई सरकार हिंदी स्कूलों की हालत को सुधार नहीं पाती है लेकिन अंग्रेजी मीडियम वाले स्कूल खोलकर मान लेती है कि उसने राज्य में शिक्षा की क्रांति कर दी है ।स्कूलों में शिक्षकों की कमी रहती है और शिक्षकों की भर्ती नहीं होती है ।कोई सरकार सरकारी स्कूलों में जरूरी सुविधाएं नहीं कर पाती है लेकिन स्मार्ट क्लास खोलने पर आमादा रहती है ताकि स्मार्ट क्लास को देखकर किसी को पता न चले कि गांवों के स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था का कितना बुरा हाल है। हर सरकार शिक्षा के लिए कुछ न कुछ करती रहती है लेकिन स्कूल शिक्षा व्यवस्था हो या उच्च शिक्षा व्यवस्था वहां जरुरी सुविधाएं नहीं होती हैं। आजादी के ८0 साल बाद देश में सरकारी स्कूल व्यवस्था नहीं सुधरी है तो इसका बहुत कुछ श्रेय राज्य सरकारों को भी जाता है क्योंकि कोई भी सरकार हो वह सुधार नहीं पाती है।

यह बात भाजपा व कांग्रेस दोनों राजनीतिक दल जानते हैं इसलिए वह कुछ क्षेत्र ऐसे होते हैं जिनमें राजनीति नहीं करते या कम राजनीति करते हैं क्योंकि दोनों ही राज्य मे शासन कर चुके होते हैं और राज्य में वर्तमान में समस्या है तो दोनों समस्या के लिए दोषी है ।कोई एक दूसरे को समस्या के लिए दोषी ठहराएगा तो दूसरा भी उसे भी दोषी ठहराएगा ।लेकिन सीजेपी नई नई राजनीति में आई है इसलिए उसे नया नया जोश है,सरकारी व्यवस्था मैं् खामी को बताने का। वह इस बात से खुश हो सकते हैं कि कहीं तबेले में स्कूल चल रहा था, उनके खुलासा करने से अब स्कूल तबेले में नहीं लग रहा है ।वह सोच रहे होंगे कि उन्होंने कोई ईनाम पाने वाला काम कर दिया तो यह उनकी गलतफहमी है क्योंकि एक नहीं सैकड़ों स्कूल अपना भवन न होने के कारण तबेले में लग रहे होगे ।एक कमरे में लग रहे होंगे,एक कमरे में कई कक्षाएं लग रही होंगी ।उनके स्कूल निरीक्षण से किसी राज्य में कुछ भी शिक्षा के क्षेत्र में बदलने वाला नहीं है ।वह सोचते है कि उन्होंने आंदोलन करके शिक्षा मंत्री को इस्तीफा देने के लिए मजबूर कर दिया तो क्या देश की शिक्षा व्यवस्था सुधर गई। उनके आंदोलन या शिक्षा मंत्री के इस्तीफे से देश मे कुछ भी नहीं बदलने वाला है।

देश या किसी राज्य की शिक्षा व्यवस्था को सुधारना उतना आसान नहीं है जितना काकरोच जनता पार्टी के नेता समझते हैं। किसी राज्य की शिक्षा व्यवस्था की खामी बताने से शिक्षा व्यवस्था कहां सुधरती है ।वह क्या कर रहे हैं कि स्कूल में जा रहे है और बता रहे कि स्कूल में शिक्षा की क्या व्यवस्था नहीं है,उनको व्यवस्था पता चलने पर वह क्या कर सकते हैं,स्कूल सुधारने के लिए कुछ कर सकते हैं,नहीं कर सकते ।जब किसी स्कूल की व्यवस्था वह सुधार नहीं सकते तो उनके स्कूल निरीक्षण करने का क्या मतलब रह जाता है ।ऐसे में लोग तो यह कहेंगे ही कि सीजेपी वालों के स्कूल निरीक्षण का मकसद तो राजनीति करना है,भाजपा शासित राज्यों के स्कूलों में जाकर क्यों शिक्षा की खामी बता रहे हैं ।कांग्रेस व दूसर दलों के शासन वाले राज्यों में जाना चाहिए और बताना चाहिए वहां क्या खामी है तो समझ में आता कि उनका मकसद सभी राज्यों की शिक्षा व्यवस्था को देश के लोगों को बताना है, कई लोग तो यह भी कह सकते हैं कि स्कूलों की व्यवस्था को देश के लोगों को बताने से क्या होगा क्योंकि देश के लोग जहां रहते हैं वह वहां की शिक्षा व्यवस्था के बार मे बखूबी जानते हैं कि क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं है।

जंतर मंतर के आंदोलन की सफलता का नशा सीजेपी नेताओं को चढ़ गया तो उनके सामने समस्या थी कि अब क्या किया जाए जिससे देश में उनकी वाहवाही हो और देश के लोगों को लगे कि हां यह लोग देश की हर जरूरी व्यवस्था सुधारने का काम कर सकते हैं। उन्होंने घोषणा कर दी कि वह राज्यों में जाएंगे और स्कूलों का निरीक्षण कर बताएंगे कि स्कूल मे क्या समस्या है। उनका पता नहीं था कि उनको यह काम करने का अधिकार नहीं है, क्योंकि वह भी सरकारी स्कूल है, वहां जाने के लिए अनुमति जरूरी होती है। स्कूल निरीक्षण करने का अधिकार उनको नहीं है,इसलिए स्थानीय लोगों को यह पसंद नहीं आया कि कोई बाहरी स्कूल में घुसे और स्थानीय लोगों ने उनकी पिटाई कर भगा दिया। अब वह रो-रो कह रहे हैं कि हमको मारा गया। उनकी कोई सुन नहीं रहा है क्योंकि सब मानते हैं कि कोई मार खाने वाला काम करेगा को जनता उसकी कुटाई तो करेगी ही। समझदार नेता तो वह होता है जो ऐसा काम करता नहीं है जिसे जनता पसंद नही् करती है ।जनता की पसंद का काम कोई नेता करता है तो जनता तो उसकी वाहवाही करती है,जनता किसी काम की वाहवाही नहीं कर रही है तो नेताओं को समझ जाना चाहिए कि जनता क्या करने वाली है।

4 साल से कम उम्र के बच्चों को इस दवाई के पिलाने पर लगाई बंदिश

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

वैश्विक स्तरपर वैश्विक स्तरपर किसी भी देश के लिए केवल सरकार बनाना, सत्ता का संचालन करना और विकास की योजनाएं घोषित करना ही पर्याप्त नहीं है। वास्तविक सुशासन की कसौटी तब सामने आती है,जब सरकार जनहित से जुड़े उन क्षेत्रों में भी लगातारनिगरानी कठोर नियमन और समयबद्ध निर्णय ले, जहां एक छोटी-सी प्रशासनिक चूक किसी नागरिक की जिंदगी पर भारी पड़ सकती है ।स्वास्थ्य और दवाओं की सुरक्षा ऐसा ही अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र है ।विशेष रूप से छोटे बच्चों के मामले में सरकार,दवा निमार्ता चिकित्सक,फार्मासिस्ट और अभिभावक,सभी की जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है ।इसी व्यापक जनहित और बाल सुरक्षा की दृष्टि से 22 अगस्त 2026 को केंद्र सरकार द्वारा चार वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए क्लोरफेनिरामाइन मैलेट और फिनाइलएफ्रिन हाइड्रोक्लोराइड वाले कुछ फिक्स्ड-डोज कॉम्बिनेशन पर कड़ा नियामक कदम उठाना महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

सरकार के इस निर्णय का मूल उद्देश्य किसी सामान्य सर्दी-जुकाम को लेकर भय पैदा करना नहीं,बल्कि छोटे बच्चों में ऐसी दवाओं के अनावश्यक अथवा अनुचित उपयोग से संभावित जोखिम को कम करना है। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन दोनों सक्रिय घटकों को मिलाकर बनाए गए फिक्स्ड- डोज कॉम्बिनेशन के संबंध में विशेषज्ञ स्तरपर विचार किया गया और ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड यानी की सिफारिशों के बाद चार वर्ष से कम आयु के बच्चों में इनके उपयोग को लेकर प्रतिबंधात्मक व्यवस्था लागू की गई ।इसके साथ निमार्ताओं के लिए लेबल, पैकेजिंग,दवा के साथ उपलब्ध सूचना तथा प्रचार सामग्री पर स्पष्ट आयु-संबंधी चेतावनी देना अनिवार्य किया गया है कि चार वर्ष से कम उम्र के बच्चों को ऐसी दवा नहीं दी जानी चाहिए। यह व्यवस्था इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि दवा की सुरक्षा केवल डॉक्टर के कमरे तक सीमित विषय नहीं है; दवा की बोतल और पैकेट पर लिखी स्पष्ट जानकारी भी रोगी सुरक्षा की पहली पंक्ति बन सकती है।

साथियों, मीडिया में जानकारी के अनुसार क्लोरफेनिरामाइन एक एंटीहिस्टामिन दवा है, जिसका उपयोग एलर्जी और सर्दी-जुकाम से जुड़े कुछ लक्षणों में किया जाता रहा है ।दूसरी ओर फिनाइलएफ्रिन एक डिकंजेस्टेंट के रूप में नाक बंद होने और जकड़न जैसे लक्षणों को कम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इन घटकों का संयोजन कुछ सर्दी-जुकाम तथा ऊपरी श्वसन तंत्र से संबंधित लक्षणों वाली दवाओं में मिलता रहा है। लेकिन यह समझना आवश्यक है कि किसी दवा का वयस्कों या बड़े बच्चों में इस्तेमाल होना अपने आप यह सिद्ध नहीं करता कि वही दवा बहुत छोटे बच्चों के लिए भी समान रूप से उपयुक्त होगी। बच्चों का शरीर विकसित हो रहा होता है, उनका वजन, चयापचय, अंगों की कार्यप्रणाली और दवाओं के प्रति प्रतिक्रिया उम्र के साथ बदलती है। इसलिए बाल चिकित्सा में दवा की मात्रा, संयोजन और उपयोग की उपयुक्तता को अलग वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखना आवश्यक होता है ।यही वह बिंदु है जहां सरकार का नया कदम केवल

एक दवा पर लगाया गया प्रतिबंध नहीं, बल्कि ह्यरेगुलेटरी प्रीकॉशनह्ल यानी संभावित जोखिम को पहले ही नियंत्रित करने की नीति का उदाहरण बन जाता है। यदि किसी विशेष आयु वर्ग के लिए अपेक्षाकृत सुरक्षित विकल्प उपलब्ध हैं और विशेषज्ञ समितियां किसी संयोजन के संभावित जोखिम की ओर संकेत करती हैं, तो नियामक संस्था का दायित्व बनता है कि वह बाजार में उपलब्ध दवाओं के उपयोग१ को स्पष्ट नियमों के माध्यम से सुरक्षित बनाए। खासकर चार वर्ष से कम उम्र के बच्चों के संदर्भ में सावधानी का स्तर अधिक होना स्वाभाविक है, क्योंकि इस आयु वर्ग में माता-पिता अक्सर बच्चे के लक्षणों को देखकर स्वयं दवा देने का प्रयास कर सकते हैं। यहां ह्यसर्दी-जुकाम सामान्य बीमारी हैह्ल जैसी सोच कभी- कभी गलत आत्मविश्वास पैदा कर सकती है। साथियों, अभिभावकों के लिए भी यह निर्णय एक महत्वपूर्ण संदेश लेकर आया है,बच्चे को दवा देना घरेलू अनुमान का विषय नहीं होना चाहिए।

विशेष रूप से चार वर्ष से कम उम्र के बच्चों को बिना चिकित्सकीय सलाह के सर्दी-जुकाम, खांसी, एलर्जी या नाक बंद होने की दवा देना जोखिमपूर्ण हो सकता है। अभिभावकों को दवा की पैकेजिंग पर दी गई आयु संबंधी चेतावनी पढ़नी चाहिए, दवा की मात्रा स्वयं तय नहीं करनी चाहिए और डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवा को निर्धारित मात्रा तथा अवधि के अनुसार ही देना चाहिए। यदि किसी दवा के लेबल पर चेतावनी दी गई है या बच्चे की उम्र के लिए उपयोग सीमित है, तो उसे नजरअंदाज करना बिल्कुल उचित नहीं है ।यहां स्वास्थ्य जागरूकता और डिजिटल युग की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। आज अभिभावक इंटरनेट और सोशल मीडिया से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी तेजी से प्राप्त करते हैं, लेकिन हर ऑनलाइन सलाह चिकित्सकीय रूप से प्रमाणित नहीं होती ।किसी परिचित ने किसी बच्चे को कोई दवा दी और उसे फायदा हुआ इस आधार पर वही दवा दूसरे बच्चे को देना सुरक्षित चिकित्सा पद्धति नहीं है। बच्चे की उम्र, वजन, लक्षण, बीमारी का कारण और अन्य दवाओं के साथ संभावित प्रभाव अलग हो सकते हैं। इसलिए डिजिटल जानकारी को डॉक्टर की सलाह का विकल्प नहीं बनाया जा सकता। साथियों, सरकार के मौजूदा कदम को पिछले कुछ महीनों में दवा नियमन को लेकर उठाए गए व्यापक प्रयासों की पृष्ठभूमि में भी देखना चाहिए।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार जून 2026 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 16 फिक्स्ड-डोज कॉम्बिनेशन दवाओं के निर्माण, बिक्री और वितरण पर प्रतिबंध लगाया था। इसके अतिरिक्त कफ सिरप सहित सिरप को ओवर-द- काउंटर श्रेणी से बाहर करने तथा चिकित्सकीय पर्चे के माध्यम से दवा उपलब्ध कराने से संबंधित नियामक सख्ती का उल्लेख भी सामने आया है। यदि इन कदमों को एक साथ देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि दवा क्षेत्र में सरकार का जोर केवल दवा उपलब्ध कराने पर नहीं, बल्कि दवा कीगुणवत्ता, उपयुक्तता, निगरानी और जिम्मेदार उपयोग पर भी बढ़ रहा है ।दूषित कफ सिरप से बच्चों की मौतों के मामलों ने इस विषय की गंभीरता को और बढ़ाया है। डायथिलीन ग्लाइकोल जैसे विषैले संदूषकों से जुड़े मामलों ने दुनिया को यह याद दिलाया है कि दवा जीवन बचाने का माध्यम है, लेकिन यदि उसके निर्माण, गुणवत्ता नियंत्रण,भंडारण,वितरण या उपयोग में गंभीर लापरवाही हो जाए तो वही दवा जानलेवा जोखिम में बदल सकती है। मध्य प्रदेश और राजस्थान सहित विभिन्न स्थानों पर दूषित सिरप से जुड़े बच्चों की मौतों की घटनाओं ने दवा सुरक्षा, गुणवत्ता परीक्षण और नियामक जवाबदेही को लेकर गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। इसलिए दवा सुरक्षा का अर्थ केवल किसी एक सक्रिय घटक पर प्रतिबंध लगाना नहीं,बल्कि उत्पादन से लेकर मरीज तक पहुंचने की पूरी श्रृंखला पर निगरानी स्थापित करना है।

साथियों, यहां एक महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि क्या केवल केंद्र सरकार के आदेश से दवा सुरक्षा सुनिश्चित हो जाएगी? इसका उत्तर स्पष्ट रूप से नहीं है। भारत जैसे विशाल और संघीय ढांचे वाले देश में केंद्र के साथ राज्यों के औषधि नियंत्रक, खाद्य एवं औषधि प्रशासन, स्थानीय निरीक्षण तंत्र,अस्पताल, चिकित्सक फार्मासिस्ट और दवा कंपनियां भी समान रूप से जिम्मेदार हैं। केंद्र सरकार द्वारा जारी निर्देश तभी प्रभावी होंगे जब राज्य स्तर पर उनका कठोर अनुपालन सुनिश्चित हो। मेडिकल स्टोर पर प्रतिबंधित या आयु-विशिष्ट दवाओं की बिक्री की नियमित जांच हो, चिकित्सकीय पर्चे की व्यवस्था का वास्तविक पालन हो और नियम तोड़ने वाले निमार्ताओं अथवा विक्रेताओं के खिलाफ समय पर सटीकता से कार्रवाई की जाए।

साथियों,इस पूरी व्यवस्था में दवा कंपनियों की जिम्मेदारी भी कम नहीं है। किसी दवा का उत्पादन केवल इसलिए नहीं किया जाना चाहिए कि बाजार में उसकी मांग है। फार्मास्युटिकल उद्योग का मूल उद्देश्य लाभ के साथ-साथ मरीज की सुरक्षा होना चाहिए। पैकेजिंग पर चेतावनी को छोटे अक्षरों में औपचारिकता की तरह लिख देना पर्याप्त नहीं होगा। चेतावनी ऐसी भाषा और स्थान पर होनी चाहिए जिसे सामान्य उपभोक्ता आसानी से समझ सके। प्रचार सामग्री में भी ऐसी प्रस्तुति से बचना होगा जिससे अभिभावकों को यह भ्रम हो कि सर्दी-जुकाम की हर दवा बच्चों के लिए स्वतः सुरक्षित है। नियमन का वास्तविक उद्देश्य तभी पूरा होगा जब कम्प्लायंस कागज से निकलकर व्यवहार में दिखाई दे।

साथियों, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी दवा सुरक्षा का मूल सिद्धांत यही है कि बच्चों के लिए दवाओं का उपयोग वैज्ञानिक प्रमाण, आयु- विशिष्ट सुरक्षा और स्पष्ट नियामक निदेर्शों के आधार पर होना चाहिए। विश्वभर में ह्यपेडियाट्रिक मेडिसिन सेफ्टीह्ल लगातार महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य विषय बन रहा है। भारत जैसे विशाल बाजार में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहां दवाओं की उपलब्धता व्यापक है और लाखों परिवार स्वास्थ्य संबंधी निर्णय स्वयं लेने की स्थिति में होते हैं। ऐसे में सरकार की जिम्मेदारी केवल प्रतिबंध जारी करना नहीं, बल्कि जनजागरूकता पैदा करना, निगरानी व्यवस्था मजबूत करना और नियमों के उल्लंघन पर त्वरित कार्रवाई करना भी है।

साथियों, इस पूरे घटनाक्रम से सुशासन की एक व्यापक परिभाषा सामने आती है। सुशासन का अर्थ केवल बड़ी परियोजनाएं, डिजिटल सेवाएं या आर्थिक विकास नहीं है। जब सरकार किसी संभावित स्वास्थ्य जोखिम की पहचान करती है, विशेषज्ञों की राय लेती है, तकनीकी सलाहकार बोर्ड की सिफारिशों पर निर्णय करती है, कंपनियों को स्पष्ट चेतावनी देने के लिए बाध्य करती है और बच्चों जैसे संवेदनशील वर्ग को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करती है,तब शासन का मानवीय पक्ष सामने आता है। जनता सरकार से यही अपेक्षा करती है कि वह संकट के बाद प्रतिक्रिया देने के बजाय संभावित संकट को पहले पहचानकर रोकने की क्षमता विकसित करे ।फिर भी इस दिशा में आगे की राह लंबी है। केवल एक-दो दवाओं या कुछ एफडीसी पर कार्रवाई से दवा सुरक्षा की समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं होगी। देश को निरंतर फामाकीविजिलेंस, मजबूत गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशालाओं, तेज नमूना परीक्षण, राज्य औषधि नियंत्रण तंत्र में पर्याप्त मानव संसाधन, डिजिटल ट्रैकिंग और दवा निमार्ताओं की जवाबदेही को और मजबूत करना होगा। संदिग्ध दवाओं की पहचान और बाजार से वापसी की प्रक्रिया भी तेज तथा पारदर्शी होनी चाहिए। यदि किसी दवा के कारण गंभीर प्रतिकूल प्रभाव सामने आते हैं, तो उनकी रिपोर्टिंग और जांच की व्यवस्था आम नागरिक के लिए भी सरल होनी चाहिए। साथियों, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दवा सुरक्षा को केवल स्वास्थ्य मंत्रालय की जिम्मेदारी मानने की मानसिकता बदलनी होगी। यह सरकार,नियामक संस्थाओं डॉक्टरों,फार्मासिस्टों दवा कंपनियों, अस्पतालों और आम नागरिकों की साझा जिम्मेदारी है। चार वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए क्लोरफेनिरामाइन मैलेट और फिनाइलएफ्रिन हाइड्रोक्लोराइड वाले एफडीसी को लेकर केंद्र सरकार का मौजूदा कदम इसी साझा जिम्मेदारी को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण नियामक संदेश है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति कामूल्यांकन इस बात से नहीं होना चाहिए कि उसने कितनी दवाएं बाजार में उतारीं, बल्कि इस बात से होना चाहिए कि उसने अपने नागरिकों को सुरक्षित दवा उपलब्ध कराने के लिए कितनी मजबूत व्यवस्था बनाई। छोटे बच्चों की सुरक्षा के मामले में ह्यपहले सावधानी, फिर उपचारह्ल का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार का यह निर्णय यदि कठोर निरीक्षण, पारदर्शी नियमन, चिकित्सकीय जिम्मेदारी, उद्योग की जवाबदेही और अभिभावकों की जागरूकता के साथ लागू होता है, तो यह केवल एक नियामक आदेश नहीं रहेगा, बल्कि जनहित आधारित सुशासन का प्रभावी उदाहरण बन सकता है। आज दुनिया के हर देश के नागरिक की यही अपेक्षा है कि सरकारें केवल नेतृत्व न करें, बल्कि जब नागरिकों की जिंदगी और स्वास्थ्य का सवाल हो, तब समय पर सही निर्णय लें, नियमों का कड़ाई से पालन कराएं और किसी भी संभावित खतरे को बड़ा संकट बनने से पहले रोकें। बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा में यही जिम्मेदार शासन की सबसे मानवीय और सबसे आवश्यक पहचान है।

महंगाई काबू में है, बस आम आदमी का बजट बेकाबू है

प्रो. आरके जैन

रसोई का दरवाजा खुलते ही आज सबसे पहले बजट नजर आता है। चीनी महँगी है, तेल जेब का हिसाब बिगाड़ रहा है, दाल का हर निवाला सोचकर खाना पड़ रहा है और सब्जियों के बढ़ते दाम थाली का संतुलन बिगाड़ रहे हैं। दूध की मलाई अब सामान्य सुविधा नहीं रही। महंगाई ने सवाल बदल दिया है—पहले पूछा जाता था, आज क्या पकाएँ; अब सोचना पड़ता है, क्या छोड़ें। रोटी अब सिर्फ भोजन नहीं, मासिक बजट का हिस्सा बन गई है। जरूरी चीजें महँगी हों तो सबसे पहले बचत घटती है, फिर इच्छाएँ सीमित होती हैं। सहनशीलता को ताकत कहा जाता है, लेकिन लगातार बढ़ती कीमतों के बीच वही मजबूरी बन जाती है।

सरकारी दावों और बाजार की हकीकत के बीच दूरी साफ दिखती है। महंगाई नियंत्रण में होने की बात कही जाती है, लेकिन किराने की दुकान पर उसका असर नहीं दिखता। आँकड़े प्रतिशत में राहत दिखा सकते हैं, पर परिवार का बजट रुपये में चलता है। दाल महँगी हो तो वैश्विक कारण, तेल बढ़े तो अंतरराष्ट्रीय बाजार का हवाला मिलता है। सवाल है, सस्ताई के समय यही वैश्विक परिस्थितियाँ असरदार क्यों नहीं दिखतीं? आम आदमी बिना किसी आर्थिक डिग्री के महंगाई समझता है। चीनी, तेल, दूध और प्याज के भाव से वह महीने का अनुमान लगाता है। उसके लिए महंगाई कोई आर्थिक शब्द नहीं, रोज का अनुभव है। यही सरकारी भाषा और रसोई की भाषा के बीच बढ़ते भरोसे के अंतर की वजह है।

महंगाई ने ऐसा मध्यमवर्ग खड़ा कर दिया है जिसकी आय स्थिर है, लेकिन जरूरतों की कीमत लगातार बढ़ रही है। कागज पर वह गरीब नहीं, पर महीने के अंत में आय-व्यय का हिसाब उसे असुरक्षित कर देता है। घरों में अब बच्चों को उन दिनों की सस्ती चीजों के बारे में बताना पड़ता है, जो कभी सामान्य थीं। ह्यसस्ताह्ल शब्द धीरे-धीरे अनुभव से निकलकर स्मृति बन रहा है। महंगाई का असर सिर्फ थाली पर नहीं, बचत, शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य की योजनाओं पर भी पड़ता है। आय का बड़ा हिस्सा जरूरी खर्च में जाए तो सपनों की जगह अपने आप छोटी हो जाती है। इस दबाव को केवल औसत आँकड़े पूरी तरह नहीं समझा सकते।

महंगाई पर नियंत्रण के उपायों की कमी नहीं, लेकिन नतीजे सीमित हैं। गोदाम खोलने, आयात बढ़ाने, जमाखोरी पर कार्रवाई, बैठकों और घोषणाओं की खबरें आती रहती हैं। सरकारें कदम उठाती हैं, लेकिन उपभोक्ता को राहत तभी मिलती है जब बाजार की कीमत घटे। चुनावों में महंगाई रोकने के वादे होते हैं, फिर कुछ समय बाद वही चिंता लौट आती है। समस्या यह नहीं कि सरकार कुछ नहीं करती, बल्कि यह है कि प्रयास और आम आदमी को मिली राहत के बीच दूरी बनी रहती है। नियंत्रण की घोषणा तभी सार्थक है, जब उसका असर किराने की सूची पर दिखे। चीनी की पुड़िया और तेल की बोतल भाषण नहीं, कीमत समझते हैं।

महंगाई ने परिवार की बातचीत और प्राथमिकताएँ बदल दी हैं। पहले घरेलू बजट एक व्यवस्था था, अब वह बदलती कीमतों से जूझता हिसाब बन गया है। पत्नी सब्जी, तेल और चीनी का अनुमान लगाती है, पति वेतन और बाकी खर्च का। समस्या एक ही है—जरूरतें अनेक, पैसा सीमित। कई परिवारों को भोजन की गुणवत्ता, बचत और छोटी इच्छाओं में से चुनाव करना पड़ता है। महंगाई सिर्फ चीजें महँगी नहीं करती, परिवार के फैसले भी बदलती है। आय का बड़ा हिस्सा जरूरी खर्च में जाए तो शिक्षा, स्वास्थ्य, यात्रा और आकस्मिक जरूरतों के लिए पैसा कम पड़ता है। यही रोजमर्रा का दबाव महंगाई को आर्थिक से बढ़ाकर सामाजिक समस्या बनाता है।

बढ़ती कीमतों ने आर्थिक दूरी को समझने का तरीका बदल दिया है। अब केवल आय नहीं, यह भी देखना जरूरी है कि उस आय से परिवार कितनी जरूरतें पूरी कर पा रहा है। महंगाई का असर गरीब पर सबसे तीखा है, क्योंकि उसकी आय का बड़ा हिस्सा भोजन और जरूरी वस्तुओं पर खर्च होता है। मध्यमवर्ग भी इससे अछूता नहीं, क्योंकि उसकी बचत और भविष्य की योजनाएँ प्रभावित होती हैं। रिश्तेदारों और मित्रों की बातचीत में भी अब दाम जगह बना चुके हैं—तेल कहाँ सस्ता है, सब्जियाँ किस बाजार में कम हैं, दाल कितने की है। महंगाई ने सिर्फ बाजार नहीं, लोगों की प्राथमिकताएँ और बातचीत भी बदल दी हैं।

अर्थशास्त्र के सिद्धांत अपनी जगह हैं, लेकिन महंगाई की असली परीक्षा घर की थाली में होती है। मांग- आपूर्ति, वैश्विक बाजार और मुद्रास्फीति जैसे शब्द तभी मायने रखते हैं, जब उनका असर परिवार के खर्च में साफ दिखे। विशेषज्ञ इसे अस्थायी बताते हैं, लेकिन लंबे समय तक बनी ऊँची कीमतें आम आदमी के लिए अस्थायी नहीं रह जातीं। लगातार बढ़ती लागत से बचत घटती है, खर्च की प्राथमिकताएँ बदलती हैं और भविष्य को लेकर अनिश्चितता बढ़ती है। इसलिए महंगाई को केवल आर्थिक सूचकांक मानना अधूरा होगा। असली तस्वीर यह है कि एक सामान्य परिवार अपनी आय से कितना भोजन, ईंधन, शिक्षा और बचत सुरक्षित रख पा रहा है। यही महंगाई का वास्तविक असर है।

आम आदमी की परेशानी समझने का सबसे सीधा रास्ता उसकी रसोई से होकर जाता है। बड़ी घोषणाओं की सफलता तभी मानी जाएगी, जब रोजमर्रा की जरूरी चीजें उसकी पहुँच में रहें। नियंत्रण की बातें तभी भरोसा जगाएँगी, जब उनका असर बाजार में दिखे। गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार के लिए चीनी, तेल, दाल, दूध और सब्जियाँ मामूली वस्तुएँ नहीं, बुनियादी जरूरतें हैं। इनके दाम बढ़ते हैं तो सबसे पहले भोजन, फिर बचत और अंततः भविष्य प्रभावित होता है। आम आदमी को भाषण नहीं, राहत चाहिए। उसकी आवाज आँकड़ों में नहीं, थाली में सुननी होगी। जब तक जरूरी चीजें उसकी पहुँच में नहीं आतीं, महंगाई पर नियंत्रण का दावा अधूरा रहेगा।

मोबाइल की घातक चाह का आत्मघाती दलदल और दम तोड़ते नौनिहाल

अशोक भाटिया

महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर से आई हालिया हृदयविदारक घटना ने आधुनिक समाज की बुनियाद को हिलाकर रख दिया है। एक उन्नीस वर्षीय किशोर ने महज एक महंगे आईफोन की मांग पूरी न होने पर पहाड़ी की चोटी से छलांग लगा दी। उसे बचाने की तीन घंटे की मर्मभेदी कोशिशों के बीच पिता ने उसे पकड़ना चाहा, पर दोनों का संतुलन बिगड़ गया और वे सैकड़ों फीट गहरी खाई में जा गिरे। इस भयावह मंजर को अपनी आंखों से देखने वाली बेबस मां ने भी बदहवास होकर मौत की उसी खाई में छलांग लगा दी। चंद पलों में, एक स्मार्टफोन की जिद ने हंसते-खेलते पूरे परिवार का अस्तित्व ही मिटा दिया। यह कोई अकेली घटना नहीं है।

कुछ ही समय पहले गाजियाबाद में तीन सगी बहनों द्वारा डिजिटल लत और मानसिक तनाव के चलते की गई सामूहिक खुदकुशी की घटना ने भी देश को झकझोर दिया था। उत्तर प्रदेश के अमरोहा में 10 साल के मासूम बच्चे की रील देखते-देखते अचानक दिल का दौरा पड़ने से हुई मौत ने तो चिकित्सा जगत को भी हैरत में डाल दिया है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल में पुरानी मोबाइल बैटरी के फटने से मासूम की जान जाने का मामला हो या ऑनलाइन गेम में पैसे हारने पर किशोरों द्वारा उठाए जाने वाले आत्मघाती कदम; ये सभी घटनाएं चिल्ला-चिल्लाकर कह रही हैं कि मोबाइल की चाह अब सिर्फ एक लत नहीं, बल्कि हमारे नौनिहालों के लिए एक जानलेवा महामारी बन चुकी है।

आखिर वह कोमल बचपन, जो कभी तितलियों के पीछे भागने, कागजों की कश्ती तैरने और गलियों में मिट्टी से सराबोर होने में अपनी खुशी ढूंढता था, आज पांच इंच की इस कांच की स्क्रीन का गुलाम कैसे हो गया? यह सवाल आज हर उस घर का है जहां एक बच्चा चौबीस घंटे अपनी उंगलियों को स्क्रीन पर सरकाता रहता है। सरकार के आधिकारिक आर्थिक सर्वेक्षण तक में इस समस्या को एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के रूप में चिह्नित किया चुका है। डॉक्टरों और न्यूरोलॉजिस्ट्स का स्पष्ट मानना है कि किशोरावस्था में बच्चों का मस्तिष्क पूरी तरह विकसित नहीं होता है। ऐसे में अत्यधिक और अनियंत्रित डिजिटल एक्सपोजर उनके सोचने की क्षमता को विकृत कर देता है। उनमें आवेग और चिड़चिड़ापन इस कदर बढ़ जाता है कि वे ह्यनाह्ल सुनने की क्षमता पूरी तरह खो देते हैं। किसी वस्तु की मांग पूरी न होने पर या ऑनलाइन दुनिया में खुद को कमतर पाने पर वे सीधे अपनी जीवनलीला समाप्त करने जैसा भयावह कदम उठा लेते हैं।

इस विकट स्थिति के लिए किसी एक पक्ष को जिम्मेदार ठहराकर हम अपनी सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारी से मुंह नहीं मोड़ सकते। इसके जिम्मेदार कई स्तरों पर मौजूद हैं। सबसे पहली और प्राथमिक जिम्मेदारी माता-पिता की है। आधुनिक जीवनशैली की भागदौड़, काम के दबाव और अपनी व्यक्तिगत व्यस्तताओं के कारण पेरेंट्स ने स्मार्टफोन को एक ह्यसस्ते बेबीसिटरह्ल या ह्यडिजिटल लोरीह्ल के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। बच्चा रोया नहीं कि उसके हाथ में फोन थमा दिया गया, बच्चा खाना नहीं खा रहा तो स्क्रीन पर कार्टून चला दिया गया। शुरूआती दौर में जिस स्क्रीन को बहलावे का साधन समझा गया, वह धीरे-धीरे कब बच्चों के मानसिक तंत्र पर हावी हो गई, इसका अंदाजा अभिभावकों को तब लगता है जब पानी सिर से ऊपर बह चुका होता है। इसके साथ ही, बच्चों के स्क्रीन टाइम और वे इंटरनेट पर क्या देख रहे हैं, इस पर प्रभावी निगरानी रखने में पैरेंट्स पूरी तरह नाकाम साबित हो रहे हैं। इस मायाजाल के पीछे बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियों का व्यावसायिक लालच भी पूरी तरह जिम्मेदार है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, रील्स, शॉर्ट्स और ऑनलाइन बैटल गेम्स का एल्गोरिदम इस तरह से डिजाइन किया जाता है जो सीधे मानवीय मस्तिष्क में ह्यडोपामाइनह्ल के स्तर को नियंत्रित करे। यह बिल्कुल किसी मादक पदार्थ के सेवन जैसा है। जैसे ही यूजर एक रील स्क्रॉल करता है, उसे एक नया रोमांच मिलता है, जिससे उसे लगातार फोन देखते रहने की लत लग जाती है। इन कंपनियों के पास बच्चों को हानिकारक कंटेंट, साइबर बुलिंग या अश्लीलता से बचाने के लिए कोई ठोस और फुलप्रूफ सुरक्षा फिल्टर मौजूद नहीं हैं। उनके लिए बच्चे सिर्फ एक ह्यडेटाह्ल और मुनाफे का जरिया हैं। हम एक ऐसे समाज में तब्दील हो चुके हैं जहां कंक्रीट के जंगलों के बीच बच्चों के लिए खेल के मैदान खत्म हो चुके हैं। एकल परिवारों के बढ़ते चलन और पड़ोसियों से संवादहीनता के कारण आज का बच्चा बेहद अकेला है। जब उसे घर के भीतर अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए कोई सजीव साथी, दादा-दादी या दोस्त नहीं मिलते, तो वह इस अकेलेपन को भरने के लिए स्मार्टफोन की आभासी दुनिया की शरण लेता है। यह आभासी दुनिया उसे झूठी तसल्ली तो देती है, लेकिन असल जिंदगी में उसे और अधिक संवेदनशून्य, आत्मकेंद्रित और कमजोर बना देती है।

स्मार्टफोन की लत सिर्फ जानलेवा हादसों या खुदकुशी तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह अंदर ही अंदर हमारी आने वाली पीढ़ी की मानसिक और शारीरिक क्षमता को घुन की तरह खा रही है। स्क्रीन के अत्यधिक इस्तेमाल से बच्चों में अनिद्रा (क्ल्ल२ह्णेल्लं), आंखों की गंभीर बीमारियां, मोटापा और एकाग्रता की कमी जैसी समस्याएं आम हो चुकी हैं। इससे भी खतरनाक है उनका मानसिक स्वास्थ्य। जब एक बच्चा सोशल मीडिया पर दूसरों की ह्यपरफेक्टह्ल जिंदगी या महंगे गैजेट्स देखता है, तो उसमें हीन भावना घर कर जाती है। वह यह समझने में असमर्थ रहता है कि स्क्रीन पर दिखने वाली दुनिया बनावटी है। इसी हीन भावना के वशीभूत होकर वह अपने माता-पिता पर महंगे फोन या साधनों के लिए दबाव बनाता है, और इंकार मिलने पर चरम कदम उठा लेता है।

छत्रपति संभाजीनगर की घटना हमारे लिए आखिरी चेतावनी की तरह है। अगर आज भी हमने अपनी आंखें नहीं खोलीं, तो डिजिटल एडिक्शन का यह अजगर न जाने कितने और परिवारों को निगल जाएगा। समाधान के लिए हमें एक व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना होगा। हर घर में ह्यनो-गैजेट जोनह्ल और ह्यनो-मोबाइल ऑवर्सह्ल निर्धारित होने चाहिए, जिसका पालन बच्चों के साथ-साथ माता-पिता भी करें। पैरेंटल ऐप्स और इंटरनेट फिल्टर्स का इस्तेमाल अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए ताकि बच्चे की डिजिटल गतिविधियों पर नजर रखी जा सके। माता-पिता को अपने बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना होगा। बच्चों को यह विश्वास दिलाना जरूरी है कि उनकी पहचान किसी महंगे गैजेट या सोशल मीडिया के लाइक्स से तय नहीं होती। उन्हें ह्यनाह्ल सुनने और असफलताओं को स्वीकार करने का हौसला बचपन से ही देना होगा। सरकार को टेक कंपनियों और गेमिंग प्लेटफॉर्म्स के लिए अत्यंत सख्त नियम बनाने होंगे। बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम को सीमित करने वाले फीचर्स को इन-बिल्ट करना और हानिकारक वेबसाइट्स पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना वक्त का तकाजा है। शिक्षा व्यवस्था में भी ह्यडिजिटल हाइजीनह्ल को एक अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।

स्मार्टफोन विज्ञान का एक बेहतरीन आविष्कार है, लेकिन जब कोई आविष्कार इंसानी जान की कीमत पर हावी होने लगे, तो उसे वरदान नहीं, अभिशाप माना जाता है। नौनिहालों की जाती जान के लिए सीधे तौर पर हम सब जिम्मेदार हैं—वह माता-पिता भी जो फोन देकर निश्चिंत हो गए, वह समाज भी जिसने बच्चों से उनके खेल के मैदान छीन लिए, वह व्यवस्था भी जो तकनीक के इस बेलगाम घोड़े पर लगाम लगाने में सुस्त है। समय आ गया है कि हम बच्चों के हाथों से स्मार्टफोन छीनकर उन्हें फिर से वही पुरानी किताबें, मिट्टी के खिलौने और खुले आसमान के नीचे खेलने वाले खेल वापस लौटाएं। हमें यह याद रखना होगा कि एक आईफोन दोबारा खरीदा जा सकता है, लेकिन किसी मां-बाप के बुझ चुके घर का चिराग कभी दोबारा नहीं जल सकता।

अंतत:, हमें यह स्वीकार करना होगा कि डिजिटल युग का यह संकट किसी एक घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं है, यह हमारी पूरी सभ्यता की परीक्षा है। तकनीक सुविधा के लिए थी, समर्पण के लिए नहीं। जब हम अपने बच्चों को समय देने के बजाय उनके हाथों में चमचमाता स्मार्टफोन थमाते हैं, तो असल में हम उनकी मासूमियत का सौदा कर रहे होते हैं। आज हर माता-पिता को खुद से यह कड़वा सवाल पूछना होगा—क्या पांच इंच की उस बेजान स्क्रीन की कीमत, मेरे बच्चे की अनमोल मुस्कान और उसकी जिंदगी से ज्यादा है?

यदि आज भी हमारा समाज इस सामूहिक मतिभ्रम से बाहर नहीं निकला, तो आने वाला इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। यह समय दोषारोपण का नहीं, बल्कि आत्म-मंथन और कड़े फैसलों का है। सरकारें नियम बनाएंगी, कंपनियां मुनाफा कमाएंगी, लेकिन अपने बच्चे को इस ह्यसफेद जहरह्ल से बचाना अंतत: हमारी अपनी जिम्मेदारी है। याद रखिए, बचपन दोबारा लौटकर नहीं आता, और खोई हुई सांसें किसी भी डिजिटल स्टोर पर वापस नहीं मिलतीं। आइए, आज ही संकल्प लें कि हम अपने घरों को तकनीक का गुलाम नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं का जीवंत केंद्र बनाएंगे।

राहत योजना : गोल्डन ऑवर में त्वरित उपचार से बच रही अनमोल जिंदगियां

पीएम-राहत योजना के तहत धमतरी जिले में 31 प्रकरणों में से 13 दुर्घटना पीड़ितों को मिला नि:शुल्क उपचार का लाभ

नई दृष्टिबिंदु / एसआर पराशर, उप संचालक धमतरी

सड़क दुर्घटना के बाद शुरूआती समय पीड़ित के जीवन के लिए बेहद महत्वपूर्ण होता है। इसी संवेदनशील समय में उपचार की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारत सरकार की महत्वाकांक्षी पीएम-राहत (प्रधानमंत्री रोड एक्सीडेंट विक्टिम हॉस्पिटलाइजेशन एंड एश्योर्ड ट्रीटमेंट) योजना का प्रभावी क्रियान्वयन धमतरी जिले में किया जा रहा है। योजना के तहत सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्तियों को अस्पताल पहुंचते ही कैशलेस एवं त्वरित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाती है, ताकि उपचार में आर्थिक कठिनाई अथवा कागजी औपचारिकता बाधा न बने।

5 मई 2025 से लागू योजना के अंतर्गत सड़क दुर्घटना के पीड़ितों को अस्पताल में भर्ती होने के दिन से अधिकतम सात दिनों तक प्रति व्यक्ति 1 लाख 50 हजार रुपए तक का नि:शुल्क उपचार उपलब्ध कराया जाता है। योजना का मूल उद्देश्य दुर्घटना के बाद के महत्वपूर्ण ह्यगोल्डन ऑवरह्ण में घायल व्यक्ति को शीघ्र अस्पताल पहुंचाकर आवश्यक उपचार उपलब्ध कराना और गंभीर स्थिति में जीवन बचाने की संभावनाओं को अधिकतम करना है।

जिले में 31 प्रकरणों में 13 पीड़ित हुए लाभान्वित

धमतरी जिले में जिला प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अस्पतालों और संबंधित स्वास्थ्य संस्थाओं के बीच समन्वय सुनिश्चित किया जा रहा है। जिले में अब तक 31 सड़क दुर्घटना प्रकरणों में योजना के तहत कार्रवाई की गई, जिनमें 13 दुर्घटना पीड़ितों को योजना का लाभ मिला है। इनमें गंभीर रूप से घायल मरीज भी शामिल हैं, जिन्हें समय पर अस्पताल पहुंचाकर आवश्यक उपचार उपलब्ध कराया गया।

सभी शासकीय स्वास्थ्य संस्थानों में सुविधा

जिले के सभी संबंधित शासकीय स्वास्थ्य संस्थानों, जिनमें जिला अस्पताल, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी), प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) एवं शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (यूपीएचसी) शामिल हैं, के माध्यम से योजना के क्रियान्वयन की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा जिले के 20 निजी अस्पताल भी योजना से जुड़े हैं। इनमें 19 अस्पताल आयुष्मान भारत के तहत इम्पैनल्ड हैं, जबकि एक निजी अस्पताल पीएम-राहत योजना के तहत विशेष रूप से इम्पैनल्ड है। इस नेटवर्क के माध्यम से दुर्घटना पीड़ितों को उनके निकट उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधा में शीघ्र उपचार दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।

त्वरित उपचार और मानवीय संवेदना हमारी प्राथमिकता : कलेक्टर अबिनाश मिश्रा

कलेक्टर अबिनाश मिश्रा ने कहा कि सड़क दुर्घटना की स्थिति में प्रत्येक मिनट महत्वपूर्ण होता है। प्रशासन का प्रयास है कि किसी भी दुर्घटना पीड़ित को आर्थिक कारणों अथवा औपचारिकताओं के चलते उपचार के लिए इंतजार न करना पड़े। पीएम-राहत योजना जरूरतमंदों को संकट की घड़ी में तत्काल चिकित्सा सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग और संबंधित अस्पतालों को योजना के प्रावधानों के अनुरूप संवेदनशीलता एवं तत्परता के साथ कार्य करने तथा दुर्घटना पीड़ितों को समय पर उपचार उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।

गोल्डन ऑवर में उपचार से बच सकती हैं कई जानें : सीएमएचओ

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. यू. एल. कौशिक ने बताया कि सड़क दुर्घटनाओं में समय पर उचित उपचार नहीं मिल पाना गंभीर स्थिति और मृत्यु का एक प्रमुख कारण हो सकता है। पीएम-राहत योजना दुर्घटना के बाद के शुरूआती और महत्वपूर्ण समय में उपचार की बाधाओं को दूर करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। गोल्डन ऑवर में त्वरित एवं नि:शुल्क उपचार मिलने से मरीज की स्थिति को बिगड़ने से रोकने और जीवन बचाने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र अथवा अस्पताल पहुंचाने में सहयोग करें।

नागरिकों के लिए सूचना

सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को तत्काल नजदीकी शासकीय स्वास्थ्य केंद्र अथवा योजना से संबद्ध अस्पताल पहुंचाएं। पीएम-राहत योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी एवं आवश्यक सहायता के लिए नागरिक मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय, धमतरी से संपर्क कर सकते हैं।

खास खबर

महतारी वंदन की राशि को आजीविका में लगाया, बीज राखियों से पर्यावरण संरक्षण का संदेश

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

रक्षाबंधन के अवसर पर ग्राम जुनवानी की बिहान दीदियों ने भाई-बहन के रिश्ते को आजीविका से जोड़ते हुए नई पहल की है। गांव के 6 स्व-सहायता समूहों की महिलाएं बीज और फैंसी राखियां तैयार कर रही हैं। अब तक करीब डेढ़ लाख रुपये की राखियों की बिक्री हो चुकी है। बिक्री से प्राप्त राशि का उपयोग महिलाएं आगे राखी निर्माण और अन्य आजीविका गतिविधियों के विस्तार में कर रही हैं।

समूह की महिलाओं ने बताया कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत उन्हें आजीविका गतिविधियों के लिए आरएफ से 15 हजार रुपये की सहायता मिली। इसके साथ सीआईएफ से 60 हजार रुपये की राशि का उपयोग आर्थिक गतिविधियों के विस्तार के लिए किया गया। समूह की महिलाओं ने महतारी वंदन योजना से प्राप्त राशि को भी इस गतिविधि में लगाया और राखी निर्माण के लिए कच्चा माल खरीदा। इसके बाद महिलाओं ने मिलकर अलग-अलग डिजाइन की बीज और फैंसी राखियां तैयार कीं। बाजार में मांग के कारण इनकी बिक्री लगातार हो रही है। जुनवानी की बीज राखियां इस पहल की खास पहचान बनी हैं। राखी में मौजूद बीज को रक्षाबंधन के बाद मिट्टी में रोपकर पौधा तैयार किया जा सकता है। इस तरह महिलाओं द्वारा तैयार उत्पाद त्योहार के साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दे रहे हैं।

30 किस्तों से मिला आर्थिक संबल

महतारी वंदन योजना के तहत पात्र महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपये की राशि दी जा रही है। अब तक योजना की 30 किस्तें जारी हो चुकी हैं। जुनवानी की महिलाओं ने योजना से मिली राशि का उपयोग आजीविका गतिविधि में कर राखी निर्माण शुरू किया है। इससे उन्हें अपनी मेहनत और हुनर के माध्यम से अतिरिक्त आमदनी का अवसर मिला है।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में बढ़े आजीविका के अवसर

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य शासन द्वारा महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने और आत्मनिर्भर बनाने के लिए योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से बिहान की दीदियों को स्व-सहायता समूहों में संगठित कर आजीविका के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। पीआरपी श्रीमती ऋतु बंजारे ने कहा कि जुनवानी की महिलाओं ने उपलब्ध संसाधनों और अपने हुनर का बेहतर उपयोग करते हुए राखी निर्माण को आय का माध्यम बनाया है। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा, बहनों का मान और विष्णु भैया का सम्मान, महिलाओं के सशक्तिकरण से समृद्ध छत्तीसगढ़ महान।

धनागर और बिछीनारा में आबकारी विभाग की कार्रवाई, 23.5 लीटर अवैध महुआ शराब जप्त

रायगढ़। कलेक्टर मयंक चतुवेर्दी के निर्देश एवं प्रभारी सहायक आयुक्त आबकारी अभिषेक तिवारी के मार्गदर्शन में जिले में अवैध मदिरा के निर्माण, विक्रय एवं परिवहन के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में आबकारी विभाग द्वारा 22 अगस्त को घरघोड़ा एवं रायगढ़ उत्तर वृत्त क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए कुल 23.5 लीटर अवैध महुआ शराब जप्त की गई। आबकारी वृत्त रायगढ़ (उत्तर) को ग्राम धनागर में अवैध महुआ शराब रखे जाने की शिकायत प्राप्त हुई थी। शिकायत के आधार पर आबकारी टीम द्वारा ग्राम धनागर में छापेमार कार्रवाई की गई। मौके पर आरोपी निराकार उरांव पिता रामलाल उरांव, उम्र 30 वर्ष, निवासी ग्राम धनागर की गवाहों के समक्ष विधिवत तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान उसके कब्जे से 8 लीटर महुआ शराब बरामद की गई, जिसकी अनुमानित बाजार कीमत 1,600 रुपये है। इसी क्रम में आबकारी वृत्त घरघोड़ा द्वारा ग्राम बिछीनारा में प्राप्त शिकायत पर दबिश दी गई।

'राखी का रिश्ता, भरोसे का साथ विष्णु भैया संग विकास की बात'

कम लागत में राखियां बनाकर आत्मनिर्भरता की राह पर बढ़ रहीं बिहान की महिलाएं

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान से जुड़कर ग्रामीण महिलाएं समूह के माध्यम से विभिन्न आजीविका गतिविधियों को अपनाते हुए आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बन रही हैं। सरगुजा जिले के अम्बिकापुर विकासखंड के ग्राम पंचायत किशुन नगर की जय मां दुर्गा स्वयं सहायता समूह की महिलाएं भी इसी बदलाव की प्रेरक मिसाल बनकर उभरी हैं। समूह की महिलाएं मौसम और त्योहारों के अनुरूप सीजनल गतिविधियों का चयन कर अपनी आय के नए अवसर तैयार कर रही हैं।

रक्षाबंधन पर्व को देखते हुए इन दिनों समूह की महिलाएं घर में उपलब्ध सामग्री और स्थानीय संसाधनों से आकर्षक राखियां तैयार कर रही हैं। चावल, गेहूं, मक्का और कोहड़े के बीज सहित अन्य सामग्री को रंगकर और सजाकर सुंदर राखियां बनाई जा रही हैं। वहीं रेशमी धागे, ऊन और अन्य सजावटी सामग्री आवश्यकतानुसार बाजार से खरीदी जाती है। इससे राखियों की उत्पादन लागत कम रहती है और महिलाओं को बेहतर आय अर्जित करने का अवसर मिलता है।

12 महिलाओं ने मिलकर संवारी आजीविका

समूह की सदस्य सुश्री सोनाली सिंह ने बताया कि जय मां दुर्गा स्वयं सहायता समूह में कुल 12 महिलाएं हैं। सभी सदस्य मिलकर अलग-अलग मौसम और त्योहारों के अनुरूप आजीविका गतिविधियों का संचालन करती हैं। वर्तमान में राखी निर्माण का कार्य किया जा रहा है। तैयार राखियों को विभिन्न स्थानों पर स्टॉल लगाकर तथा घर से भी बेचा जा रहा है। उन्होंने बताया कि बिहान योजना से जुड़ने से पहले महिलाओं के पास आय के सीमित साधन थे। स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्हें प्रशिक्षण, योजनाओं और विभिन्न आजीविका गतिविधियों से जुड़ने का अवसर मिला। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा और वे आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने लगीं।

घरेलू सामग्री से तैयार हो रहीं आकर्षक राखियां

समूह की सदस्य सुश्री दीप्ति चौधरी बताती हैं कि राखी निर्माण में घरेलू सामग्री का उपयोग किया जा रहा है। पुराने बीज, चावल, गेहूं और मक्के के दानों को आकर्षक रंग देकर उनसे अलग-अलग डिजाइन तैयार किए जाते हैं। इसके साथ रेशमी धागे, ऊन और अन्य सजावटी सामग्री का उपयोग कर राखियों को आकर्षक रूप दिया जाता है। समूह की महिलाएं अपने खाली समय में एक साथ बैठकर राखियां तैयार करती हैं। त्योहार के दौरान मांग बढ़ने पर उत्पादन भी बढ़ा दिया जाता है। तैयार राखियों की बिक्री बाजार में लगाए गए छोटे-छोटे स्टॉल और घर से की जा रही है। इस तरह महिलाएं पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ अपने हुनर को आय के साधन में बदल रही हैं।

तीन वर्षों से सीजनल गतिविधियों से जुड़ी महिलाएं

समूह की सदस्य सुश्री आशा रवि ने बताया कि समूह की महिलाएं पिछले लगभग तीन वर्षों से कम लागत में घरेलू सामग्री से राखियां तैयार कर रही हैं। समूह की सभी महिलाएं मिलकर इस कार्य में भागीदारी करती हैं। उन्होंने कहा कि बिहान योजना से जुड़ने के बाद उन्हें रोजगार और आजीविका की विभिन्न गतिविधियों से जुड़ने का अवसर मिला है। उन्होंने बताया कि समूह से जुड़ने से महिलाओं को नई गतिविधियां सीखने, घर से बाहर निकलकर आर्थिक कार्यों में भागीदारी करने और अपनी अलग पहचान बनाने का अवसर मिला है। इससे महिलाओं के आत्मविश्वास के साथ-साथ परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में भी मदद मिल रही है।

सीजन के अनुसार बदलती गतिविधियां, बढ़ते आय के अवसर

जय मां दुर्गा स्वयं सहायता समूह की महिलाएं वर्षभर मौसम और त्योहारों के अनुरूप अलग-अलग गतिविधियों का चयन करती हैं। इससे उन्हें एक ही व्यवसाय पर निर्भर रहने के बजाय आय के अनेक अवसर मिलते हैं। समूह के माध्यम से सामूहिक रूप से कार्य करने से उत्पादन, प्रशिक्षण, बाजार और बिक्री में भी एक-दूसरे का सहयोग मिलता है। राखी निर्माण जैसी गतिविधियों ने महिलाओं को यह अवसर दिया है कि वे घर और आसपास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर कम लागत में उत्पाद तैयार करें और उन्हें बाजार तक पहुंचाकर आय अर्जित करें।

विष्णु भैया के सुशासन में विष्णुभोग की महक से महक रहा जीपीएम

नई दृष्टिबिंदु / जीपीएम

छत्तीसगढ़ का 25वां नवगठित जिला गौरेला-पेंड्रा-मरवाही अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ अब विशिष्ट कृषि उत्पाद सुगंधित विष्णुभोग चावल के कारण भी नई पहचान बना रहा है। भारत सरकार की एक जिला-एक उत्पाद योजना के अंतर्गत विष्णुभोग चावल को जिले के प्रमुख उत्पाद के रूप में चुना गया है। मनमोहक सुगंध, उत्कृष्ट स्वाद और पारंपरिक खेती की विशेषताओं के कारण विष्णुभोग चावल आज जीपीएम जिले की विशिष्ट पहचान बन चुका है। विष्णुभोग की महक अब खेतों तक सीमित नहीं है, बल्कि जिले की सीमाओं को पार कर प्रदेश और देश के विभिन्न हिस्सों तक पहुंच रही है।

पेंड्रा क्षेत्र में लगभग 1,500 किसान करीब 600 एकड़ भूमि में विष्णुभोग धान की खेती कर रहे हैं। किसानों की मेहनत, सामूहिक प्रयास और प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ते कदमों ने इस विशिष्ट धान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। विष्णुभोग की खेती किसानों की आय बढ़ाने के साथ जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान कर रही है।

विष्णुभोग चावल की खेती से लेकर उसके प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन तक महिलाओं की भागीदारी इसे आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी बना रही है। मलनिया महिला फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी, पेंड्रा द्वारा किसानों से विष्णुभोग धान की खरीदी की जाती है। इसके बाद मिनी राइस मिल में धान का प्रसंस्करण कर आकर्षक पैकेजिंग और ब्रांडिंग के साथ बाजार में उपलब्ध कराया जा रहा है। इस कार्य से समूह की 15 महिला सदस्यों को स्थायी रोजगार मिला है। महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होकर लखपति दीदी बनने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। समूह की महिलाओं द्वारा अब तक लगभग 2 टन विष्णुभोग चावल की सफलतापूर्वक बिक्री की जा चुकी है, जिससे उन्हें करीब 1 लाख रुपये का लाभ प्राप्त हुआ है।

विष्णुभोग की सफलता यह बताती है कि जब स्थानीय संसाधनों को किसानों की मेहनत और महिला शक्ति का साथ मिलता है, तो पारंपरिक उत्पाद भी व्यापक बाजार में अपनी अलग पहचान बना सकते हैं। विष्णुभोग चावल आज जीपीएम जिले के किसानों की समृद्धि, बहनों के स्वावलंबन और स्थानीय उद्यमिता का सशक्त प्रतीक बनकर उभर रहा है। एक जिला-एक उत्पाद योजना के माध्यम से विष्णुभोग चावल को उत्पादन के साथ-साथ प्रसंस्करण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और विपणन का बेहतर मंच मिल रहा है। इसकी बढ़ती मांग स्थानीय किसानों और महिला उद्यमियों के लिए नए अवसर पैदा कर रही है।

नशामुक्ति की राह पर आगे बढ़ा ग्राम बनबगौद, महिलाओं ने संभाली कमान

नई दृष्टिबिंदु / धमतरी

जिले में नशामुक्ति को लेकर चलाए जा रहे जागरूकता प्रयासों को ग्राम स्तर पर भी व्यापक जनसहयोग मिल रहा है। इसी कड़ी में जिला मुख्यालय से दूर आदिवासी बाहुल्य ग्राम बनबगौद (कुकरेल) की महिलाओं ने नशे के विरुद्ध अनुकरणीय पहल शुरू की है। गांव के करीब 30 स्व-सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं एकजुट होकर ग्राम को नशामुक्त बनाने के लिए आगे आई हैं।

नशे के कारण परिवारों और समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को करीब से देखने वाली इन महिलाओं ने अब इसे केवल सामाजिक समस्या मानकर चुप रहने के बजाय स्वयं इसके खिलाफ मोर्चा संभाला है। गांव के कई युवाओं के नशे की गिरफ्त में आने से दुर्घटनाओं में असमय मृत्यु, परिवारों की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव तथा नवविवाहित परिवारों के उजड़ने जैसी घटनाओं ने महिलाओं को इस दिशा में ठोस पहल के लिए प्रेरित किया।

महिलाएं सुबह और शाम गांव में सामूहिक रूप से गश्त लगाती हैं तथा नशे के दुष्परिणामों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए नारे लगाती हैं। वे युवाओं और ग्रामीणों से नशे से दूरी बनाने तथा स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने की अपील कर रही हैं। महिलाओं का यह अभियान सामाजिक जागरूकता के साथ-साथ सामुदायिक सहभागिता और जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत कर रहा है।

अभियान प्रारंभ करने से पहले महिलाओं ने ग्राम विकास समिति के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर इस पहल की जानकारी साझा की तथा उनके सहयोग और सहमति का आग्रह किया। ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष एवं सचिव ने महिलाओं की पहल का समर्थन करते हुए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। इससे गांव में नशामुक्ति के लिए सामूहिक प्रयासों को और मजबूती मिली है। महिलाओं के इस उत्साह और सामाजिक सरोकार को प्रोत्साहित करने के लिए मंगलवार, 25 अगस्त 2026 को ग्राम बनबगौद में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर कलेक्टर अबिनाश मिश्रा द्वारा महिलाओं को नशामुक्ति अभियान में उपयोग के लिए टोपी और बिगुल प्रदान किए जाएंगे। कार्यक्रम में अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, नगरी, उप संचालक समाज कल्याण सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

ग्राम बनबगौद की महिलाओं की यह पहल संदेश देती है कि जब समाज की मातृशक्ति किसी सकारात्मक बदलाव का संकल्प लेती है, तो वह अभियान जनआंदोलन का रूप ले सकता है। नशामुक्त गांव की दिशा में महिलाओं का यह प्रयास युवाओं के सुरक्षित भविष्य, स्वस्थ परिवार और सशक्त समाज की नींव मजबूत करने की प्रेरणादायी मिसाल बन रहा है।

तकनीकी शिक्षा | रोबोटिक्स वर्कशॉप से मिली नई दिशा, युवाओं की सहभागिता से शिक्षा विभाग कर रहा लैब का विकास

गांव के बच्चों के हाथों में होगी भविष्य की तकनीक, मगरलोड में बनेगी अत्याधुनिक रोबोटिक्स

नई दृष्टिबिंदु / धमतरी

जिले के मगरलोड क्षेत्र में विद्यार्थियों और युवाओं को आधुनिक तकनीक, नवाचार एवं उद्यमिता के नए अवसरों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की जा रही है। शिक्षा विभाग द्वारा मगरलोड में अत्याधुनिक रोबोटिक्स लैब एवं रोबोटिक्स थ्री-डी प्रिंटिंग लैब विकसित की जा रही है। इसका उद्देश्य ग्रामीण अंचल के बच्चों और युवाओं को तकनीकी शिक्षा के व्यावहारिक अवसर उपलब्ध कराना तथा उन्हें भविष्य की तकनीकों के अनुरूप तैयार करना है।

इस पहल के अंतर्गत विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखते हुए उन्हें रोबोटिक्स, थ्री-डी प्रिंटिंग, डिजाइन, प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स और नवाचार जैसे क्षेत्रों में प्रयोग एवं सीखने का अवसर मिलेगा। इससे बच्चों में तार्किक सोच, समस्या समाधान की क्षमता, रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने में मदद मिलेगी। लैब की संकल्पना को स्थानीय युवाओं की रुचि और सहभागिता से आगे बढ़ाया जा रहा है। हाल ही में मगरलोड में रोबोटिक्स वर्कशॉप आयोजित की गई, जिसमें युवाओं एवं विद्यार्थियों को रोबोटिक्स तकनीक की प्रारंभिक जानकारी, मॉडल निर्माण, प्रोग्रामिंग तथा तकनीकी प्रयोगों से परिचित कराया गया। वर्कशॉप के दौरान युवाओं की तकनीक के प्रति उत्सुकता और सीखने की रुचि को देखते हुए इस पहल को और व्यापक स्वरूप देने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इस रोबोटिक्स वर्कशॉप में कलेक्टर अबिनाश मिश्रा और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत जयंत नाहटा भी पहुंचे थे । उन्होंने बच्चों को प्रोत्साहित किया । उनके आइडियाज की सराहना की थी ।

प्रस्तावित लैब विद्यार्थियों के लिए सीखने के साथ-साथ करके सीखने का प्रभावी मंच बनेगी। यहां विद्यार्थी अपनी कल्पनाओं को मॉडल और प्रोटोटाइप के रूप में विकसित कर सकेंगे। थ्री-डी प्रिंटिंग जैसी तकनीक के माध्यम से डिजाइन को वास्तविक रूप देने का अवसर मिलेगा। आगे चलकर स्थानीय समस्याओं के तकनीकी समाधान विकसित करने, नवाचार आधारित परियोजनाओं को प्रोत्साहित करने और इच्छुक युवाओं को स्टार्टअप एवं उद्यमिता की दिशा में मार्गदर्शन देने की संभावनाएं भी विकसित होंगी।

कलेक्टर अबिनाश मिश्रा ने कहा, मगरलोड में रोबोटिक्स और थ्री-डी प्रिंटिंग लैब की स्थापना का उद्देश्य बच्चों और युवाओं को भविष्य की तकनीकों से परिचित कराना और उनकी रचनात्मक क्षमता को अवसर देना है। हमारा प्रयास है कि ग्रामीण क्षेत्र का विद्यार्थी भी आधुनिक तकनीक को केवल देखे नहीं, बल्कि उसे समझे, प्रयोग करे और अपने विचारों को नवाचार में परिवर्तित करे। स्थानीय युवाओं की सहभागिता से विकसित यह पहल शिक्षा को रोजगार, कौशल और उद्यमिता से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी। यह पहल जिले में तकनीक आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार की संस्कृति और युवा उद्यमिता को बढ़ावा देने के प्रयासों को नई गति प्रदान करेगी। मगरलोड की यह लैब आने वाले समय में विद्यार्थियों और युवाओं के लिए सीखने, प्रयोग करने और नए विचारों को साकार करने का सशक्त केंद्र बनने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

दृष्टिबाधित बच्चों ने सीखा बिना देखे स्मार्टफोन चलाना

नई दृष्टिबिंदु / रायगढ़

आधुनिक तकनीक के दौर में दृष्टिबाधिता स्मार्टफोन और डिजिटल संसाधनों के उपयोग में बाधा नहीं बनेगी। दृष्टिबाधित बच्चों को तकनीक के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें शिक्षा, संवाद तथा दैनिक जीवन में डिजिटल संसाधनों का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से समग्र शिक्षा एवं एक कदम और फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में 20 से 22 अगस्त तक तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में जिले के 39 चिन्हांकित दृष्टिबाधित बच्चों एवं उनके अभिभावकों ने सहभागिता की।

प्रशिक्षण के दौरान एक कदम और फाउंडेशन के मास्टर ट्रेनर्स एवं समग्र शिक्षा के बीआरपी स्पेशल एजुकेटर्स ने बच्चों को स्मार्टफोन के स्वतंत्र संचालन की व्यावहारिक जानकारी दी। बच्चों को बिना देखे मोबाइल संचालित करने, विभिन्न उपयोगी सुविधाओं और सहायक तकनीकों का इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षकों ने बताया कि स्मार्टफोन का उपयोग केवल बातचीत या मनोरंजन तक सीमित न रखकर शिक्षा, जानकारी प्राप्त करने, संवाद स्थापित करने और अपनी क्षमताओं को विकसित करने के प्रभावी माध्यम के रूप में किया जा सकता है। तीन दिनों तक बच्चों ने स्वयं स्मार्टफोन चलाकर विभिन्न गतिविधियों का अभ्यास किया। लगातार अभ्यास के दौरान बच्चों में तकनीक के प्रति आत्मविश्वास और रुचि बढ़ती दिखाई दी।

स्क्रीन पर कैरेक्टर को जस्टिफाई करना एक एक्टर की जिम्मेदारी : समीक्षा

टेलीविजन अभिनेत्री समीक्षा भटनागर इन दिनों टीवी सीरियल 'अनुपमा' में श्रुति आहूजा के किरदार में नजर आ रही हैं। अभिनेत्री का मानना है कि वे खुशकिस्मत हैं कि उन्हें श्रुति का दिलचस्प किरदार करने और डीकेपी (डायरेक्टर्स कट प्रोडक्शन) प्रोडक्शंस में काम करने का मौका मिला। अभिनेत्री ने कहा, 'टीवी सीरियल अनुपमा पहले से बहुत लोकप्रिय शो है, जब मुझे डीकेपी (डायरेक्टर्स कट प्रोडक्शन) प्रोडक्शंस की तरफ से मुझे श्रुति आहूजा का किरदार निभाने को मिला, तो मैंने सबसे पहले उसे समझा। मुझे लगा कि इसमें दम है और यह मुझ पर सूट करता है। इसी बात ने मुझे जल्दी से रोल करने के लिए मना लिया और अब लोगों को भी यह किरदार पसंद आ रहा है।' अभिनेत्री ने आगे श्रुति आहूजा के किरदार के बारे में बताया, 'हर रोल एक नया चैलेंज लेकर आता है और श्रुति आहूजा का किरदार भी कुछ ऐसा ही था। वह एक मां है, जिन्हें अपनी बेटी के लिए खुद को जस्टिफाई करना पड़ता है। वह अपनी बेटी से प्यार करती हैं, लेकिन वह एक नेगेटिव कैरेक्टर नहीं हैं और मैं नहीं चाहती थी कि लोग उन्हें उस तरह से देखें।' उन्होंने आगे कहा, 'मेरा मानना ??है कि स्क्रीन पर उस कैरेक्टर को जस्टिफाई करना एक एक्टर की जिम्मेदारी है।

'स्टेज पर ही आखिरी सांस लेना चाहता हूं' : अखिल सचदेवा

अभिनेता इमरान हाशमी की हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'आवारापन 2' के गाने 'पिया घर आया-होमकमिंग' को कंपोज करने वाले संगीतकार अखिल सचदेवा ने अपने अब तक के सफर और आगे की योजनाओं को लेकर` बात की। उन्होंने बताया कि उनका सफर बाकी गायकों से काफी अलग रहा है। उन्होंने अपने जीवन का एक सपना भी बताया। बातचीत में अखिल सचदेवा ने कहा, ''ज्यादातर गायक पहले फिल्मों में प्लेबैक सिंगिंग से शुरुआत करते हैं। इसके बाद उन्हें पहचान मिलती है और फिर वे लाइव शो करने लगते हैं। लेकिन मैंने इसका बिल्कुल उल्टा रास्ता चुना। मैंने अपने संगीत सफर की शुरुआत स्टेज शो से की और मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि मैं स्टेज के लिए ही बना हूं।'' उन्होंने इस जुड़ाव को बेहद खास अंदाज में बताते हुए कहा, ''मेरा सपना है कि मेरी आखिरी सांस भी स्टेज पर ही निकले। मेरे लिए मंच केवल गाने और परफॉर्म करने की जगह नहीं है, बल्कि यह वह जगह है, जहां मुझे अपने दर्शकों से सीधे जुड़ने का मौका मिलता है।'' अखिल ने कहा, ''मैंने भारत के अलावा दुनिया के कई हिस्सों में जाकर परफॉर्म किया है। इन लाइव शो के दौरान मुझे अलग-अलग तरह के लोगों से मिलने और उनके सामने अपना संगीत पेश करने का मौका मिला। इन्हीं स्टेज परफॉर्मेंस की वजह से मैं लोगों के दिलों तक पहुंच पाया हूं।

दुआ लिपा ने अपने समर स्विअल का खुलासा किया

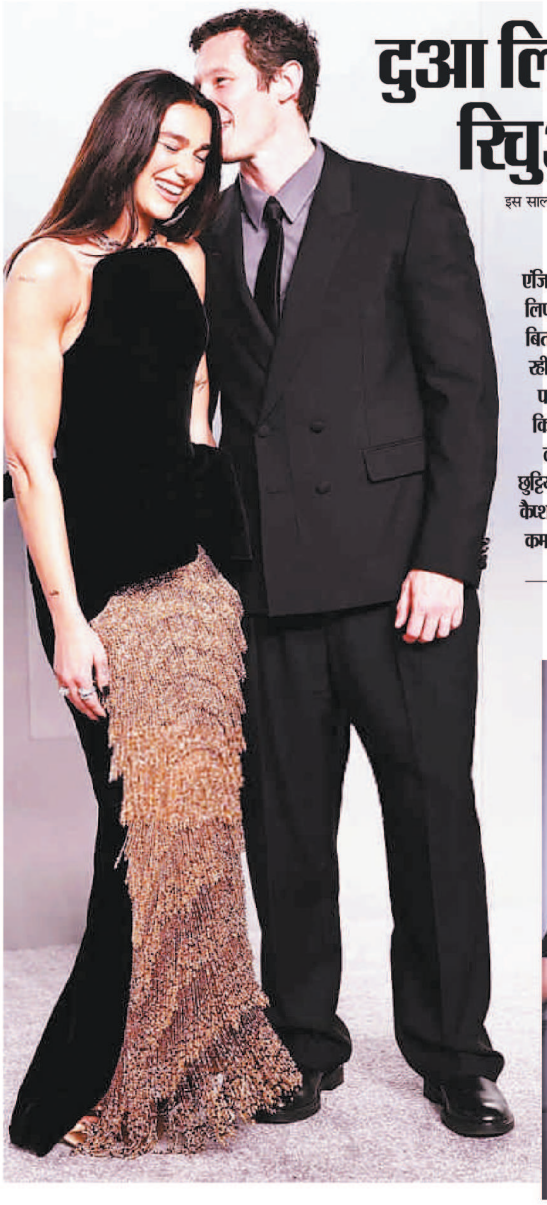

लॉस एंजिल्स। सिंगर-सॉन्गराइटर दुआ लिपा अपने पसंदीदा आइलैंड पर छुट्टियां बिताकर बेहद खुश और सुकून महसूस कर रही हैं। शुक्रवार को सिंगर ने अपने इंस्टाग्राम पर छुट्टियों की कई तस्वीरें और वीडियो शेयर किए। तस्वीरें और वीडियो में, वह अपने करीबी लोगों के साथ मजेदार खाना खाते हुए और छुट्टियों का आनंद लेते हुए दिखाई दे रही हैं। उन्होंने कैप्शन में लिखा, 'अपने पसंदीदा आइलैंड पर कम से कम एक बार जाए बिना गर्मी का मौसम अधूरा है।

इस साल की शुरुआत में शादी के बाद से ही यह सिंगर शानदार समय बिता रही हैं। उन्होंने लगभग दो साल तक डेटिंग करने के बाद ब्रिटिश एक्टर कैलम टर्नर से शादी की। इस कपल के बीच रोमांस की खबरें पहली बार 2024 की शुरुआत में उड़ी थीं और उसी साल बाद में उन्होंने अपने रिश्ते को सबके सामने जाहिर किया। लिपा ने जून 2025 में अपनी सगाई की पुष्टि की। कपल ने 31 मई, 2026 को लंदन के ओल्ड मैरीलेबोन टाउन हॉल में करीबी दोस्तों और परिवार की मौजूदगी में एक निजी सिविल सेरेमनी की। इसके बाद 6 जून को सिसिली में एक शानदार जश्न मनाया गया। इटैलियन सेरेमनी के लिए सिंगर ने खास तौर पर तैयार किया गया शनेल ऑट कउचर गाउन पहना था, जबकि खबरों के मुताबिक जश्न में कई सेलिब्रिटी मेहमान भी शामिल हुए थे। टर्नर ने हाल ही में अपनी शादी को अपनी जिंदगी का 'सबसे खूबसूरत दिन' बताया। इससे पहले, दुआ लिपा ने एल्टन जॉन के साथ अपने कोलैबोरेशन 'कोल्ड हार्ट' के 5 साल पूरे होने का जश्न मनाया, जिसे 5.3 बिलियन बार स्ट्रीम किया गया था। एक जॉइंट पोस्ट में, एल्टन जॉन और दुआ लिपा ने इस पल को सेलिब्रेट करते हुए साथ में कई तस्वीरें शेयर कीं। यह गाना जॉन और बर्नी टौपिन के साथ-साथ एंड्रयू मीचम, डीन मेरेडिथ, निकोलस लिटिलमोर, पीटर मेस और सैम लिटिलमोर द्वारा लिखे गए चार गानों का मिश्रण है। इसका प्रोडक्शन बाद के तीन लोगों ने डांस म्यूजिक ग्रुप 'प्नाउ' के हिस्से के तौर पर पूरा किया था।

डिंपी के ट्रांसफॉर्मेशन पर बोलीं हर्षिता गौर, 'अब इमोशनली समझदार और मेंटली स्ट्रॉन्ग हूं'

अभिनेत्री हर्षिता गौर आगामी फिल्म 'मिर्जापुर' में फिर से डिंपी पंडित के किरदार से वापसी कर रही हैं। अभिनेत्री का मानना है कि मिर्जापुर वेब सीरीज से लेकर अब तक उनके काम में काफी ग्रोथ देखने को मिली है। अभिनेत्री ने आगामी फिल्म 'मिर्जापुर' में फिर से डिंपी पंडित के किरदार के बारे में बताया कि वह अब पहले से बड़ी हो गई है। उन्होंने कहा, 'डिंपी के किरदार में काफी ट्रांसफॉर्मेशन हुआ है, उसने अपनी जिंदगी में बहुत तरक्की की है। मिर्जापुर के हालात कुछ ऐसे हैं कि एक समय के बाद आपको खुद को चुनना होता है और डिंपी ने भी कुछ ऐसा ही किया है। उन्होंने आगे कहा, 'वह इमोशनली समझदार और मेंटली मजबूत है, वह समझती है कि उसे अपनी ताकत दिखाने के लिए इस अफरा-तफरी का हिस्सा बनने की जरूरत नहीं है।' अभिनेत्री ने आगे शो की पॉपुलैरिटी के बारे में बात की। उन्होंने कहा, 'अगर ये फिल्म सीधे आती तो हमें पता नहीं चलता कि दर्शक उसे कैसा रिस्पॉन्स देंगे, लेकिन लोग पहले से ही शो के इतने बड़े फैन हैं और इसे और ज्यादा देखना चाहते हैं। पहले सीजन वाला वही अंदाज वापस आ गया है, इसलिए मुझे लगता है कि ये सारी चीजें इस एक्सपीरियंस को और भी बेहतर बनाएंगी।' अभिनेत्री ने बताया कि डिंपी से उन्हें सीखने को मिला, कि चाहे कुछ भी हो जाए, अपने डायनामिक्स में नहीं फंसना चाहिए। आपको अपनी बात रखनी होगी, और आप बिना लड़ाई-झगड़े के ऐसा कर सकते हैं।

» गोविंदा के मैनेजर ने सुनीता के दावों को किया खारिज

कोई दूसरी शादी नहीं हो रही

गोविंदा और सुनीता की शादीशुदा जिंदगी उतार-चढ़ाव से गुजर रही है। बीते दिनों सुनीता ने दावा किया था कि गोविंदा रूमर्ड गर्लफ्रेंड के साथ दूसरी शादी करने की प्लानिंग में हैं। इन दावों पर चीची के मैनेजर का एिक्शन सामने आया है। अभिनेता गोविंदा और सुनीता आहूजा अपनी शादीशुदा जिंदगी को लेकर सुर्खियों में हैं। कुछ वक्त पहले भी दोनों के अलगाव की खबरें सामने आई थीं। सुनीता ने तलाक का केस फाइल किया था। वहीं, दो दिन पहले उन्होंने तलाक का केस वापस ले लिया। इस बीच उन्होंने ऐसा दावा किया कि गोविंदा दूसरी शादी की तैयारी में थे। सुनीता के इन दावों को गोविंदा के मैनेजर ने खारिज किया है। गोविंदा और सुनीता आहूजा की निजी जिंदगी के विवाद ने एक नया मोड़ ले लिया है। बीते दिन सुनीता ने राखी सावंत से बात करते हुए इस बात का खुलासा किया कि गोविंदा दूसरी शादी की तैयार कर रहे थे। सुनीता ने यह बात उस वक्त कही, जब राखी पैपराजी के सामने ही फोन स्पीकर पर रखकर उनसे बातें कर रही थीं। सारी बातचीत कैमरे में कैद हुई और सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने लगे। सुनीता ने दावा किया कि जब उन्हें पता चला है कि गोविंदा फिर से शादी करने की योजना बना रहे हैं, तो उन्होंने अपनी तलाक की याचिका वापस ले ली।

भाभी करीना कपूर के सपोर्ट में आई सबा पटौदी

लोगों को पर्सनल लाइफ में दखल न देने की हिदायत दी

सेलेब्स को अक्सर अपने लुक्स, बयान और कई वजहों से ट्रोलिंग का सामना करना पड़ता है, जिनके सपोर्ट में अक्सर उनके घरवाले आगे आते हैं। शनिवार को ऐसा ही हुआ, जब करीना कपूर को सपोर्ट करने के लिए उनकी ननद सबा पटौदी सामने आईं। दरअसल, सोशल मीडिया पर अभिनेत्री करीना कपूर का एक वीडियो काफी वायरल हो रहा है, जिससे लोग अंदाजा लगा रहे हैं कि अभिनेत्री तीसरे बच्चे की उम्मीद से हैं।

सबा पटौदी ने इंस्टाग्राम के जरिए अफवाहों पर विराम लगाया। उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर अभिनेत्री की वही तस्वीर पोस्ट कर कहा कि कुछ बातें प्राइवेट ही होनी चाहिए। साथ ही, उन्होंने लोगों को किसी की पर्सनल लाइफ के बारे में अंदाजा लगाने से बचने की अपील की। सबा पटौदी ने लिखा, 'एक बेकार एंगल और खराब हेयर-डे हो सकता है। लोग कैसे इतनी बड़ी बात सोच लेते हैं। वो एयरपोर्ट से एकदम स्टाइलिश और स्लिम लुक में निकली थी और अब जिम से।

बस इतनी-सी बात है। उन्होंने आगे बताया कि वह अपनी बहन सोहा अली खान को दूसरे बच्चे के लिए मना रही हैं, लेकिन बात नहीं बन रही है। सबा पटौदी ने लिखा, 'मैं अपनी बहन को दूसरे बच्चे के लिए मना रही हूं... काश ये सच होता। वह ये बात कहने के लिए मुझे मार ही डालेगी!' सबा ने लोगों से दूसरों की निजी जिंदगी में दखल न देने की अपील भी की और लिखा, 'जियो और जीने दो। कुछ चीजें प्राइवेट ही रहने दीजिए। अंदाजा लगाने की जरूरत नहीं है। प्यार और सम्मान के साथ। बता दें कि करीना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें करीना जिम से निकलकर अपनी कार की ओर जाती दिख रही थीं, तभी उनकी टीम का एक मेंबर पपराजी से बचाने के लिए उनके सामने छाता लगा देता है।

लोगों ने बेबी बंप की चर्चा शुरू की

इसी वीडियो के बाद लोगों ने बेबी बंप की चर्चा शुरू कर दी। बता दें, करीना और सैफ अली खान ने अक्टूबर 2012 में शादी की थी। उनके दो बेटे हैं - तैमूर अली खान, जिसका जन्म 2016 में हुआ था और जहांगीर अली खान, जिसे प्यार से जेह कहा जाता है, जिसका जन्म 2021 में हुआ था।

नशे के खिलाफ सख्त कार्रवाई के साथ जागरूकता भी जरूरी : एनसीबी

युवाओं को नशे से बचाने में मीडिया अपनी पहुंच का प्रभावी उपयोग करें

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

छत्तीसगढ़ में नशे की समस्या से निपटने के लिए नशीले पदार्थों की तस्करी के खिलाफ सख्त कार्रवाई के साथ जनजागरूकता को भी समान महत्व देना जरूरी है। खासकर युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों और मीडिया की सामूहिक भागीदारी आवश्यक है। यह बात नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के अधीक्षक अनिल कुमार ने कही। वे पत्र सूचना कार्यालय रायपुर की ओर से नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत-संकल्प अभियान के तहत राजनांदगांव में आयोजित वातार्लाप कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

अनिल कुमार ने कहा कि नशे के खिलाफ लड़ाई केवल तस्करी के खिलाफ कार्रवाई तक सीमित नहीं हो सकती। नशीले पदार्थों की अवैध आपूर्ति पर नियंत्रण के साथ उनकी मांग को कम करना भी जरूरी है। उन्होंने बताया कि नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की नशीले पदार्थों पर नियंत्रण की रणनीति में आपूर्ति नियंत्रण और मांग में कमी दोनों पहलुओं पर काम किया जाता है। इसके लिए विभिन्न केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के बीच समन्वय के साथ प्रवर्तन तथा जागरूकता गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से बचाने में मीडिया की भूमिका निर्णायक हो सकती है। समाचार पत्र, टेलीविजन, डिजिटल माध्यम और सामाजिक मीडिया की व्यापक पहुंच का इस्तेमाल नशे के स्वास्थ्य, परिवार और समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को तथ्यपरक और सरल भाषा में लोगों तक पहुंचाने के लिए किया जाना चाहिए। उन्होंने मीडिया प्रतिनिधियों से नशे के खिलाफ सकारात्मक जनजागरूकता का वातावरण तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। एनसीबी अधीक्षक ने बताया कि छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में स्कूलों, महाविद्यालयों और सार्वजनिक स्थानों पर नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए सरकारी प्रयासों के साथ समाज की सक्रिय भागीदारी जरूरी है।

कार्यक्रम में पत्रकार श्रीमती प्रियंका कौशल ने कहा कि नशे के खिलाफ लड़ाई को प्रभावी जनआंदोलन बनाने के लिए पत्रकारिता को सामाजिक सरोकार और जनजागरण से जोड़ना होगा। पत्रकार अपनी कलम और जनसंचार की ताकत के माध्यम से युवाओं तथा समाज को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि केवल नशा छोड़ो का संदेश दोहराने से अपेक्षित बदलाव नहीं आएगा। पत्रकारिता को नशे के सामाजिक कारणों, इससे प्रभावित परिवारों और नशे से बाहर निकलने वाले लोगों की वास्तविक कहानियों को सामने लाकर समाज में व्यवहार परिवर्तन का वातावरण तैयार करना होगा। श्रीमती प्रियंका कौशल ने छत्तीसगढ़ में कम उम्र के बच्चों और युवाओं में नशे की शुरूआत को गंभीर चुनौती बताते हुए कहा कि बच्चों को नशे से बचाना केवल परिवार की जिम्मेदारी नहीं है। समाज, मीडिया और प्रत्येक जागरूक नागरिक को अपनी भूमिका निभानी होगी। उन्होंने अपने पत्रकारिता अनुभव का उल्लेख करते हुए रायपुर के हाटबंद क्षेत्र की वर्षो पुरानी रिपोर्टिंग का उदाहरण साझा किया, जहां नशे के कारण परिवारों की बदहाल स्थिति से परेशान महिलाओं ने इसके खिलाफ संघर्ष किया था। उन्होंने कहा कि नशे का असर केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरा परिवार और समाज इसकी चपेट में आता है। उन्होंने नशे के महिमामंडन के खिलाफ सामाजिक चेतना की जरूरत पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि फिल्मों, गीतों और सामाजिक व्यवहार में कई बार नशे को तनाव या दुख से मुक्ति के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी धारणाओं को चुनौती देने के लिए मीडिया को नशे के दीर्घकालिक स्वास्थ्य, पारिवारिक और सामाजिक दुष्परिणामों को तथ्यपरक तरीके से सामने लाना चाहिए।

कार्यक्रम में सबेरा संकेत के संपादक सुशील कोठारी और दैनिक दावा के संपादक दीपक बुद्धदेव ने भी अपने विचार रखे। दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शंकर मुनि राय ने पत्रकारिता के सामाजिक दायित्व पर प्रकाश डालते हुए अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार और सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ निर्भीकता से पत्रकारिता करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जोनल निदेशक रवि जोशी, नांदगांव टाइम्स के संपादक अशोक कुमार पांडे तथा वरिष्ठ पत्रकार पुरुषोत्तम तिवारी मंच पर उपस्थित रहे। वक्ताओं ने कहा कि नशे के खिलाफ प्रभावी लड़ाई के लिए सरकारी प्रयासों के साथ मीडिया, शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों और परिवारों की साझी भागीदारी जरूरी है। कार्यक्रम में पत्रकारों से छत्तीसगढ़ के युवाओं को नशे से बचाने और नशामुक्त समाज के निर्माण में अपनी पत्रकारिता को जनजागरूकता के अभियान से जोड़ने का आह्वान किया गया।

खास खबर

केमिकल वाले पनीर से बचने का आसान उपाय है सोया पनीर - किसान नेता अशोक चौधरी

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

किसान नेता अशोक चौधरी ने कहा कि वर्तमान में बाजार में केमिकल से बने नकली पनीर की बिक्री तेजी से बढ़ रही है। सरकार इस पर अंकुश लगाने का प्रयास कर रही है, फिर भी लालच के कारण कुछ व्यवसायी ऐसा घृणित और अमानवीय कृत्य कर रहे हैं। चौधरी ने मिलावटी पनीर से छुटकारा पाने का सरल उपाय बताते हुए कहा कि या तो दूध से घर में पनीर बनाएं या सबसे अच्छा विकल्प सोया पनीर बनाएं। उन्होंने सोया पनीर बनाने की विधि बताई - घर के उपयोग के लिए एक पाव या आधा किलो सोयाबीन को साफ करके रात में भिगो दें, सुबह मिक्सी में बारीक पीस लें और साफ कपड़े से छान लें। तैयार दूध को उबालकर नींबू या पनीर मसाला से फाड़कर सामान्य पनीर की तरह ही सोया पनीर बना सकते हैं।

किसान नेता ने बताया कि 1 किलो सोयाबीन से 8 किलो दूध बनता है। एक पाव सोयाबीन में 2 लीटर पानी मिलाकर दूध बनाकर पनीर तैयार किया जा सकता है। सोया पनीर, मिल्क पनीर से दोगुना पौष्टिक, आसान और सस्ता है। उन्होंने कहा कि 1 किलो सोया पनीर बनाने में मात्र 50 से 60 रुपये का खर्च आता है, जबकि बाजार में मिल्क पनीर 440 रुपये किलो बिक रहा है। कुछ माह पहले राजनांदगांव में भी नकली पनीर पकड़ा गया था। जितनी बड़ी कंपनियां हैं, मुनाफे के लिए मिलावट करती हैं। चौधरी ने कहा कि शहर और प्रदेश में सक्रिय महिला समूह इस कार्य को कर सकती हैं। समूह सोया पनीर बनाकर अपने उपयोग के साथ ही बाजार में भी उपलब्ध करा सकती हैं, इससे लाभ होगा। साथ ही स्कूलों के मध्यान्ह भोजन में भी समूह द्वारा सोया पनीर उपलब्ध कराकर बच्चों को पौष्टिक आहार दिया जा सकता है।

धान की फसल के लिए यूरिया-डीएपी से भी ज्यादा जरूरी है पोटाश - भाजपा किसान नेता अशोक चौधरी

भाजपा किसान नेता अशोक चौधरी ने कहा कि धान की फसल के लिए यूरिया और डीएपी से भी ज्यादा महत्वपूर्ण पोटाश खाद है। पोटाश का उपयोग धान की बुवाई के 20-25 दिन बाद अनिवार्य रूप से करना चाहिए, वहीं रोपा लगाने वाले किसान रोपा तैयारी के समय ही खेत में पोटाश दें। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक अवस्था में धान में निकलने वाले कंसा या कल्ले की मजबूती के लिए पोटाश बहुत उपयोगी है। पोटाश धान के पौधे में कड़ापन और कड़वापन लाता है, जिससे कीट-व्याधि का प्रकोप कम हो जाता है।

चौधरी ने कहा कि धान में दाना भरने में पोटाश की अहम भूमिका है। जैसे दूध में दही का जामन डालने से दूध दही बनता है, वैसे ही पौधे को पोटाश मिलने पर धान का दूध जमकर दाना बनता है। एक क्विंटल धान उत्पादन में 2 से 3 किलो पोटाश खर्च होता है। किसानों को अपने उत्पादन के हिसाब से 2 किलो प्रति क्विंटल के मान से प्रति एकड़ पोटाश का छिड़काव अवश्य करना चाहिए। उन्होंने बताया कि जमीन में पोटाश का कुछ अंश रहता है और धान कटाई के बाद बची जड़ भी खेत में पोटाश का रूप ले लेती है। पोटाश का छिड़काव तीन बार करना चाहिए। पहला रोपा लगाते समय या बुवाई के 20-25 दिन बाद, दूसरा पौधे के 60 दिन पूरे होने से पहले और तीसरा जब धान में बालियां निकलकर फूल आता है यानी दाना बनने से पहले।

किसान नेता ने किसानों को सावधानी बरतने की सलाह देते हुए कहा कि यूरिया छिड़कते समय पोटाश को मिलाकर नहीं छिड़कना चाहिए। पहले पोटाश डालें और 2-3 दिन बाद यूरिया का छिड़काव करें। इससे पौधे में कीट-व्याधि का प्रकोप न के बराबर होगा। यह सामयिक सलाह कृषि जानकारों द्वारा सुझाए गए फामूर्ले के तहत दी जा रही है। मैं स्वयं अपने खेत में इसी तरह पोटाश और यूरिया का उपयोग करता हूं, इससे फसल को लाभ होता है, दाने भरपूर आते हैं और फसल निरोग व पुष्ट होती है।

निगम शहर में मूलभूत सुविधाओं के सुधार और सौंदर्यीकरण के लिए किए जा रहे निरंतर कार्य

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

नगर पालिक निगम राजनांदगांव द्वारा शहर में नागरिक सुविधाओं को बेहतर बनाने, स्वच्छता एवं सुगम आवागमन सुनिश्चित करने तथा सार्वजनिक स्थलों के सौंदर्यीकरण के लिए निरंतर कार्य किए जा रहे हैं। बारिश के दौरान उत्पन्न समस्याओं के त्वरित निराकरण के साथ ही शहर के विभिन्न क्षेत्रों में पाइपलाइन मरम्मत, सड़क सुधार, अतिक्रमण हटाने, मवेशी नियंत्रण एवं उद्यानों के जीर्णोद्धार की दिशा में कार्य जारी है।

पाइपलाइन मरम्मत के बाद सड़क को किया जा रहा समतल

कमला कॉलेज रोड से कलेक्टोरेट बंगला के बीच पाइपलाइन मरम्मत के लिए खोदे गए गड्ढे को सुधार कार्य पूर्ण होने के बाद पाटकर समतल करने की कार्रवाई की जा रही है। इसी प्रकार कमला कॉलेज रोड में कौरिनभाठा तालाब के पास पाइपलाइन में लीकेज के कारण जीवन कॉलोनी में प्रभावित हुई जलापूर्ति को भी सुधार लिया गया है। निजी टेलीकॉम कंपनी द्वारा भूमिगत केबल बिछाने के दौरान पाइपलाइन क्षतिग्रस्त होने से पटरी पार क्षेत्र के कुछ वार्डों में मटमैले पानी की समस्या उत्पन्न हुई थी। पाइपलाइन का सुधार कर लीकेज की जांच एवं आवश्यक मरम्मत की गई है। कुछ क्षेत्रों में गंदे पानी की शिकायत मिलने पर संबंधित पाइपलाइनों की जांच एवं सुधार कार्य भी किया जा रहा है। फिल्टर प्लांट में सुचारू जलापूर्ति के लिए लगातार निगरानी रखी जा रही है।

प्रतिमा स्थलों का मरम्मत और सौंदर्यीकरण

शहर के चौक-चौराहों में स्थापित पुरानी प्रतिमाओं एवं उनके स्थलों के रखरखाव और सौंदर्यीकरण की दिशा में नगर निगम द्वारा कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में रानी अवंती बाई लोधी की प्रतिमा स्थल का मरम्मत कार्य पूर्ण कर सौंदर्यीकरण किया गया है। इसी तर्ज पर शहर के अन्य प्रतिमा स्थलों का भी चरणबद्ध तरीके से मरम्मत एवं सौंदर्यीकरण किया जाएगा।

बारिश के बाद कीचड़ व जलभराव वाले क्षेत्रों में सफाई

अत्यधिक बारिश के कारण शहर के कुछ क्षेत्रों में कीचड़ एवं जलभराव की स्थिति निर्मित हुई है। नगर निगम द्वारा ऐसे स्थानों पर सफाई एवं आवश्यक सुधार कार्य कराया जा रहा है। पानी भराव से निजात दिलाने के लिए धंसी हुई इंटरलॉकिंग को भी दुरूस्त किया जाएगा।

शहर के चौक-चौराहों एवं प्रमुख मार्गों पर आवारा मवेशियों के कारण होने वाली समस्या के समाधान के लिए नगर निगम द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। निगम के 18 कर्मचारियों की टीम द्वारा प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों में दिन एवं रात के समय अभियान चलाकर मवेशियों को पकड़कर कांजी हाउस में रखा जा रहा है। रात्रि में भी मवेशियों को सड़कों से हटाने की कार्रवाई की जा रही है। कांजी हाउस में सीमित स्थान तथा मवेशियों की अधिक संख्या को देखते हुए निर्धारित शुल्क लेकर मवेशी मालिकों को उनके मवेशी सुपुर्द किए जा रहे हैं। समस्या के स्थायी समाधान के लिए बड़े कांजी हाउस के निर्माण हेतु स्थल की तलाश की जा रही है। साथ ही मवेशी मालिकों की बैठक आयोजित कर उन्हें अपने मवेशियों को खुले में नहीं छोड ? के संबंध में जागरूक करने की योजना है।

नगर निगम सीमा क्षेत्र के कुछ पुराने उद्यानों की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए इस वित्तीय वर्ष के बजट में जीर्णोद्धार का प्रावधान रखा गया है। इसके क्रियान्वयन की प्रक्रिया भी प्रारंभ की जा रही है। उद्यानों में नागरिकों के लिए बेहतर सुविधाएं एवं व्यवस्थित वातावरण सुनिश्चित करने के लिए नगर निगम द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। शहर के प्रमुख मार्गो, सार्वजनिक स्थलों एवं फुटपाथों पर रखे ठेला-खोमचा के कारण यातायात बाधित होने तथा पानी निकासी प्रभावित होने की स्थिति को देखते हुए नगर निगम का अतिक्रमण दस्ता लगातार कार्रवाई कर रहा है। सार्वजनिक मार्गो को व्यवस्थित एवं सुगम बनाने के साथ जल निकासी व्यवस्था को भी बेहतर बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत टीबी उन्मूलन के लिए 5 पायलेट ग्रामों का चयन

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत जिले में टीबी उन्मूलन हेतु 5 पायलेट ग्रामों का चयन किया गया है। टीबी उन्मूलन हेतु चयनित पायलेट ग्रामों में छुरिया विकासखंड के ग्राम मासुल, राजनांदगांव विकासखंड (घुमका) के ग्राम खैरझिटी एवं बुंदेलीकला, डोंगरगांव विकासखंड के ग्राम करमतरा, डोंगरगढ़ विकासखंड के ग्राम मुसराकला शामिल है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नेतराम नवरतन ने बताया कि राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत चयनित ग्रामों में टीबी उन्मूलन के लिए माय भारत वालंटियर्स एवं एनसीसी केडेट के सहयोग से नुक्कड़ नाटक, घर-घर सर्वे, दिवाल लेखन, ग्रामसभा का आयोजन किया जाएगा। राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत भारत वालंटियर्स एवं एनसीसी केडेट को 5 दिसवीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। साथ ही समुदाय में मितानिनों के साथ समन्वय कर ग्राम को टीबी मुक्त बनाने हेतु विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाएगी।

जिला क्षय अधिकारी डॉ. अल्पना लुनिया ने बताया कि पायलट ग्रामों हेतु कुल 25 माय भारत वालंटियर्स एवं 25 एनसीसी केडेट का चयन किया गया है। उन्हें जिला अस्पताल, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर में होने वाले गतिविधियों से अवगत कराया गया है। माय भारत वालंटियर्स एवं एनसीसी केडेट द्वारा चयनित ग्रामों में समय-समय पर टीबी जन जागरूकता संबंधी विविध प्रकार की गतिविधियां की जायेगी। इनके माध्यम से टीबी के लक्षणों की पहचान, जांच हेतु बलगम संग्रहण एवं टीबी के उपचार तक ग्रामीणों को आवश्यक सहयोग प्रदान किया जाएगा। जिला कार्यक्रम प्रबंधक संदीप ताम्रकार ने बताया कि 25 दिसम्बर 2026 तक घुमका क्षेत्र में हैण्ड हेल्ड मशीन के माध्यम से एक्स-रे कराया जाएगा। जिनके एक्स-रे में संदेहास्पद पाये जाने पर उनकी जांच नॉट मशीन से कराया जाएगा एवं टीबी पाजीटिव पाये जाने पर तत्काल टीबी का उपचार प्रारंभ कर दिया जाएगा। स्वास्थ्य विभाग द्वारा राजनांदगांव जिले को टीबी मुक्त जिला बनाने के लिए विभिन्न गतिविधियां एवं सार्वभौमिक प्रयास किया जा रहा है।

रामनगर वार्ड क्रमांक 8 तथा ग्राम पंचायत बछेराभाठा व पैरीटोला में मोबाईल कैम्प का आयोजन

मोबाईल कैम्पों के माध्यम से श्रमिक पंजीयन के लिए किए जा रहे आवेदन, श्रमिकों को दी जा रही शासन की योजनाओं की जानकारी

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों की समस्याओं के समाधान के लिए एसओपी अंतर्गत जिले के ग्राम पंचायतों में मोबाईल कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। मोबाईल कैम्प के माध्यम से श्रमिकों के कल्याण के लिए चलाए जा रहे शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जा रही है तथा पात्र आवेदक को योजनाओं से लाभान्वित करने आवेदन प्राप्त किए जा रहे है।

इसी क्रम में राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम पंचायतों एव नगरीय निकायों में मोबाईल कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत आज राजनांदगांव शहर के वार्ड क्रमांक 8 रामनगर वार्ड, डोंगरगढ़ विकासखंड के ग्राम पंचायत

बछेराभाठा एवं छुरिया विकासखंड के ग्राम पंचायत पैरीटोला में मोबाईल कैम्प का आयोजन किया गया। मोबाईल कैम्प के माध्यम से छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार राज्य सामाजिक सुरक्षा मण्डल तथा छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मण्डल अंतर्गत श्रमिकों का पंजीयन एवं पंजीकृत श्रमिकों के नवीनीकरण हेतु आवेदन किया गया। साथ ही श्रमिक को योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए एवं संशोधन हेतु आवेदन किया गया। ई-श्रम साथी एप में रजिस्ट्रेशन करने के साथ ही पंजीकृत हितग्राहियों का ई-केवायसी भी किया गया।

सहायक श्रमायुक्त ने श्रमिकों से जिले में आयोजित मोबाईल कैम्पों में शामिल होकर नवीन श्रमिक पंजीयन एवं श्रमिक पंजीयन नवीनीकरण कराने के लिए आवेदन प्रस्तुत करने की अपील की है। मोबाईल कैम्पों में श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों के कल्याण के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

अभियान जनसंपर्क विभाग की फोटो प्रदर्शनी में वन्देमातरम् एवं राष्ट्र ध्वज तिरंगे के गौरवशाली इतिहास एवं विकास को जानने का मिला अवसर

हर घर तिरंगा, वंदे मातरम् की थीम पर कलेक्टोरेट में विशेष फोटो प्रदर्शनी का आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

जनसंपर्क विभाग द्वारा हर घर तिरंगा, वंदे मातरम् एवं भारत विभाजन की विभीषिका स्मरण दिवस थीम पर कलेक्टोरेट में विशेष फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिला कार्यालय पहुंचने वाले नागरिकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। फोटो प्रदर्शनी में हर घर तिरंगा अभियान तथा वंदेमातरम् के उत्साह एवं ऊर्जा को यादगार बनाए रखने के लिए सेल्फी जोन भी बनाया गया, जहां नागरिकों ने अपनी सेल्फी ली।

नागरिकों ने जनसंपर्क की फोटो प्रदर्शनी की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रदर्शनी के माध्यम से वन्देमातरम् एवं राष्ट्र ध्वज तिरंगे के गौरवशाली इतिहास एवं इसके विकास को जानने का अवसर मिल रहा है। फोटो प्रदर्शनी में वंदेमातरम् का आह्वान कर स्वतंत्रता संग्राम की मशाल को जलाए रखने के लिए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान एवं शौर्य गाथा का स्मरण किया गया है। वंदेमातरम् के उद्घोष एवं स्वतंत्रता संग्राम में इसके अक्षुण्य योगदान की जानकारी दी गई है। तिरंगे के इतिहास और स्वरूप में हुए बदलावों के बारे में जानकारी मिल रही है। प्रदर्शनी के माध्यम से आमजनों को वन्देमातरम् एवं राष्ट्र ध्वज तिरंगे के इतिहास को करीब से जानने का अवसर मिला है।

प्रदर्शनी के माध्यम से वंदे मातरम् एवं राष्ट्रध्वज तिरंगे के बारे में रोचक जानकारी मिली। फोटो प्रदर्शनी में जनसंपर्क विभाग की पत्रिका छत्तीसगढ़ जनमन एवं शासन की योजनाओं से संबंधित पाम्पलेट्स एवं किताबों का निःशुल्क वितरण किया गया।

उल्लेखनीय है कि विशेष फोटो प्रदर्शनी में हर घर तिरंगा अभियान के तहत वंदेमातरम् की भावना का आह्वान करते हुए देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के साहस एवं बलिदान का स्मरण करते हुए वंदेमातरम् के गौरवशाली 150 वर्षों की झांकी प्रस्तुत की गई है। प्रदर्शनी में जानकारी देते हुए बताया गया कि कलकत्ता ध्वज जिसे वंदेमातरम् ध्वज के नाम से भी जाना जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई रूपों में बनाया गया और संस्करण में वंदेमातरम् अंकित किया गया। देश का भाग्य बदलने वाले वीर गीत वंदेमातरम् की रचना 7 नवम्बर 1875 को अक्षय नवमी को हुई थी। आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के संघर्ष एवं देशवासियों में आजादी के लिए अलख जगाने वाले राष्ट्रगीत वंदेमातरम् की अक्षुण्य कथा को फोटो प्रदर्शनी में सहेजा गया। फोटो प्रदर्शनी का बड़ी संख्या में अधिकारियों, कर्मचारियों एवं नागरिकों ने अवलोकन किया।

टीईटी अनिवार्यता बंद करो, सेवा सुरक्षा पदयात्रा अगस्त क्रांति का पहला चरण साजा बेमेतरा में

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

शिक्षक मांगे अपना सम्मान ,सेवा सुरक्षा हमारी मांग, इस बार शिक्षक दिवस में विभाग हमें सही न्याय दें, से रोगन लिखकर सेवा सुरक्षा पदयात्रा अगस्त क्रांति का पहला चरण 22 अगस्त 2026 शनिवार को विकासखंड साजा, जिला बेमेतरा में छत्तीसगढ़ सहायक शिक्षक/समग्र शिक्षक फेडरेशन ब्लॉक साजा ने पदयात्रा निकाली, मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन और शिक्षा मंत्री छत्तीसगढ़ को, विकासखंड शिक्षा अधिकारी साजा के माध्यम से अनुविभागीय अधिकारी साजा को सौंपा ज्ञापन।

शिक्षक साझा मंच ने सेवारत शिक्षकों को टेट अनिवार्यता में सेवा सुरक्षा और सहायक शिक्षकों की वेतन विसंगति दूर करने हेतु पूर्व सेवा की गणना करते हुए समस्त लाभ देने का अनुरोध किया, उनका कहना था कि छत्तीसगढ़ के शासकीय विद्यालयों में शिक्षक संवर्ग अंतर्गत सहायक शिक्षक एवं शिक्षक लंबी अवधि से अनवरत अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं जिनकी समस्याओं का निराकरण किया जाना चाहिए, शिक्षक साझा मंच की प्रमुख मांगे छत्तीसगढ़ में सेवारत शिक्षकों को अपने राज्यों की भांति विशेष ळएळ, मातृ राज्य मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश ,तेलंगाना ,असम एवं अन्य राज्यों की तरह अनिवार्यता पर सेवा सुरक्षा प्रदान कर वरीयता के आधार पर पूर्व प्रचलित निम्न अनुसार पदोन्नति प्रक्रिया पूर्ण करें, मोदी के गारंटी के तहत सहायक शिक्षकों की वेतन विसंगतियां दूर कर शिक्षक संवर्ग की नियुक्ति तिथि से पूर्व सेवा गणना करते हुए कर क्रमोन्नत,पेंशन सहित समस्त लाभ प्रदान किया जावे।

सोलह दूनी आठ
नई दृष्टिबिंदु

साप्ताहिक कॉलम

याज्ञवल्क्य मिश्रा

एक जिला और तीन चेहरे

छत्तीसगढ़ का एक जिला है। मानिए कि मध्य छत्तीसगढ़ इलाके का ज़िला। यहां गरीबी से प्रति क्षण लड़ने की जो जिजीविषा है वह स्तुत्य है। सहाफी को यहाँ के तीन अफसरों के बारे में हवाई आसमानी जानकारी मिली है, और उस जानकारी के आधार पर ही सहाफी लिख रहा है कि स्तुति करने लायक अफसर हैं। यहाँ पर ट्रेफि क में एक एडिशनल एसपी स्तर के साहब हैं, उन्हें लेकर सद्भावना का मसला है। जनता परेशान है पर यह बात उसे खुश करती है कि, साहब दो सौ रुपए में भी मान जाते हैं। उसी जिले में एक डीएसपी हैं जो महीने का एक लाख मुझे दो कहकर थानेदारों की पुंगी बजाए पड़े हैं। उसी जिले में एक एडिशनल एसपी और हैं जो क से कोयले क से कबाड़ पर सख्त कार्यवाही कर कब व्यवस्थित व्यवस्था व्यवहार बना गए हैं किसी को पता ही नहीं चला। यह वह जिला है जहां कप्तान बेहद खुर्राट और हद दर्जे का इमानदार है। दबंग कप्तान को देखना चाहिए कि गरीबी से प्रतिक्षण लड़ने में अहर्निश जुटे ये तीन कौन हैं और अंततः उपचार क्या है।

शिव खफा हैं

प्रदेश में यूथ कांग्रेस के चुनाव चल रहे हैं, और युवाओं के इस चुनाव में जो सीनियर्स के बीच ताबड़तोड़ मुकाबला चल रहा है वह देखने लायक है। इस चुनाव में लड़ाई खंदक की तो नहीं है पर उससे कमतर भी शायद नहीं है। तीन तूफानी बबलू भईया एक तरफ और बाकी दिग्गज एक तरफ वाला मसला चल रहा है। लेकिन कमाल देखिए कि, कोई कुछ भी नहीं बोल रहा है। पर हर ओर की चुप्पी के बीच बबलू भईया के कार्यकाल में मंत्री रहे और चुनाव हार चुके एक नेताजी बहुत जोर से गुस्साए हैं। उनका दर्द ये है कि, बबलू भईया के आशिर्वाद का कवच पहन कर चुनाव मैदान में ताल ठोक रहा एक बंदा उनके खाँटी सियासती दुश्मन का छोटा भाई है। नेताजी अपने करीबियों को बता रहे हैं 'ये बबलू भईया ठीक नहीं कर रहे हैं, जो जोगी काँग्रेस से मेरे खिलाफ चुनाव लड़ा उसके छोटे भाई को सपोर्ट कर के गलत कर दिए हैं।' बहरहाल ये बात भी नेताजी छाँट कर विश्वसनीय परख कर ही बोल रहे हैं और वह भी कान में, उसमें भी शर्त ये कि किसी को मत बताना। सहाफी को पता चला है कि ये जो नेताजी ने अपने विश्वासपात्रों से कहा कि 'किसी को मत बताना।' इस फेर में कमोबेश सारी काँग्रेस ही इस बात को जान गई है, ये दावा भी है कि कोई किसी को बता भी नहीं रहा है।

सुशासन सरकार और क्या करेगी

लंबित मामले को लेकर अदालतें खूब चर्चा में रहती है। सुप्रीम कोर्ट से लेकर निचली अदालतों तक यह होड़ लगी रहती है कि पेडिंग का निस्तारण करें। सही भी है पेडिंग निपटान होना चाहिए। लेकिन इस फेर में किसी का भी ध्यान रेवेन्यू डिपार्टमेंट पर क्यों नहीं जाता है। जाने कब से और कितने मामले नायब और तहसीलदार साहबों की अदालत पर हैं ? सरकार ने टाईम लिमिट याने टीएल की व्यवस्था बनाई है। जानकार कहते हैं टीएल में ही पेडिंग मामले और सर्वाधिक लंबे समय से लंबित मामलों का आँकड़ा निकालें तो सरकार को जवाब नहीं सूझेगा। चुंकि सरकार है सर्वशक्तिमान और तिस पर ये कि सुशासन सरकार है तो कोई उस आँकड़े को पूछता सोचता ही नहीं है। वैसे भी सरकार क्या करेगी बेचारी ! सरकार बोलती है और खूब बोलती है कि राजस्व मसले जल्दी निपटाए जाएं। अब इससे ज्यादा सरकार क्या करेगी ? तो जोर से बोलिए - 'सुशासन सरकार की जै जै।'

नाम यूं ही थोड़ी है

एक आईएएस अफसर पर कंटेम्प्ट की कार्यवाही क्यों ना करें का नोटिस जारी हो लिया है, साहब ने ड्रायवर को एकदम ही हल्के में ले लिया और कोर्ट के आदेश को तो खैर पूरा ही। एक बंदे ने कान में फूँका है कि, ऐसे ही एक मसले में कंटेम्प्ट क्यों ना करें का नोटिस पुलिस महकमे के एक अफसर के लिए जारी होने की आशंका तैर रही है। समान ग्रेड पे के बावजूद असमानता वाली पोस्टिंग के इस मामले में हाईकोर्ट ने यह कहा था कि, याचिकाकर्ता की ट्रांसफर लिस्ट से पहले की स्थिति यथावत रखी जाए। यहीं पर चूक हो गई है। लेकिन कोई ना। अमिताभ बच्चन की फि ल्मों में अमिताभ का नाम यूँ ही तो विजय नहीं रखा जाता था। नाम में भी दम होता है। बाकी आगे आगे देखते हैं होता है क्या !

वो डायलर टोन

छत्तीसगढ़ पुलिस महकमे में पदोन्नति की बाट जोहते एक हजार पुलिसकर्मियों का इंतजार कब खत्म होगा, उनके अच्छे दिन कब आएँगे, यह बताने वाला कोई नहीं है। पदोन्नति की राह देखने वालों में सिपाही से हवलदार, हवलदार से एएसआई तक हैं। पहले ये हुआ कि नियम बनाया जाए और उस नियम के अनुसार कार्रवाई हो। बताते हैं पीएचक्यू और डिपार्टमेंट में ही फाइल डेढ़ साल तक टेबल अलमारी और फिर टेबल अलमारी का सफर तय करते रही। महकमे के बेहद सीनियर अधिकारी ने इस मसले पर भरपूर मेहनत की, तो नियम तो बनाए गए पर ऐसी स्थिति उसमें ला दी कि मसला फिर अटकने की आशंका हुई। पर आखिरकार उस नियम को लागू कर दिया गया। लगा कि अब पदोन्नति की बाट जोहते हजार से अधिक पुलिसकर्मियों के अच्छे दिन आ जाएंगे। लेकिन इस नियम में लागू की गई एक अजीब सी व्यवस्था जिसे लेकर महकमे के उस सीनियर अफसर ने आपत्ति जताई थी और कहा था कि, यह व्यवस्था असहज करने वाली है इसे हटाना या संशोधन करना चाहिए। लेकिन उसे हटाया नहीं गया था। उसी व्यवस्था याने कंडीशन पर सवाल उठाते हुए मसला कोर्ट पहुंच गया। वह कंडीशन ऐसी थी भी कि, कोर्ट संज्ञान लेता और कोर्ट ने कॉग्निजेंस ले लिया और स्टे कर दिया। अब स्टे को भी लंबा समय हो रहा है। इधर पुलिस के कर्मचारियों के सामने एक बार फिर 'एंडलेस वेटिंग कंडीशन' आ गई है। सहाफी को एक हवलदार साहब ने कहा है -'कहीं ऐसा ना हो कि बाट जोहते हम रिटायर हो जाएँ।' दुखी एक सिपाही ने तो खैर डायलर टोन ही लगा लिया है -'देर ना हो जाए कहीं देर ना हो जाए।'

अफवाह और कि स्मत

सियासत में अफवाह और कि स्मत दोनों का मुकम्मल योगदान है। कि स्मत खराब हो या कि स्मत तेज तो अफवाह भी सच हो जाती है। अब जैसे कि पीसीसी चीफ बैज हटेंगे ये चर्चा होती थी और होती है। समर्थक कहते हैं पीसीसी चीफ पद पर दीपक निरंतर रहेंगे, विरोधी कहते हैं कभी भी दीपक बुझ जाएगा। अब ये दोनों खेमों की बातें रोज नई खबरनुमा अफवाह बनती है। लेकिन कुछ ऐसा हुआ है कि, नजरें टिक गई हैं। मसला ये है कि एआईसीसी ने प्रकोष्ठ मोर्चा के रिशफल करने कहा, इसके लिए पीसीसी से प्रपोजल भी चला गया है। लेकिन इसी के साथ पीसीसी चीफ ने प्रदेश कार्यकारिणी याने उपाध्यक्ष महामंत्री जैसे पदों के लिए नाम की एक लिस्ट भी भेज दी है। अब पीसीसी कार्यकारिणी की लिस्ट ओके हो तो कि स्मत और ना हुई तो कि स्मत। ये मसला ऐसा है कि यदि कार्यकारिणी की सूची को आलाकमान मंजूरी देता है तो साफ होगा कि, पीसीसी चीफ के तौर पर बैज आगे काम करते रहेंगे। यदि मंजूरी नहीं मिली तो मतलब साफ है कि, बतौर पीसीसी चीफ बैज की पारी समाप्त होना तय है।

हिंदू ह्रदय सम्राट से सवाल

बबलू भईया ने प्रधानमंत्री आवास के मसले पर हिंदू ह्रदय सम्राट से दिलचस्प सवाल किया है। इस सवाल का अहम पहलू बिरजू भैया भी हैं। हुआ ये है कि हिंदू ह्रदय सम्राट ने 9 जून 2026 को सुशासन सरकार के मुखिया को खत लिखकर बताया कि, राज्य में सरकार ने 18.5 लाख पीएम आवास बना लिए हैं। ये पत्र मीडिया में भी प्रचारित प्रसारित कराया गया। कराना चाहिए भी। लेकिन फिर आई तारीख 11 अगस्त 2026। याने हिंदू ह्रदय सम्राट के पत्र के तीन महीने बाद की तारीख। लोकसभा सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने बयान जारी कर बताया कि, राज्य में 9.81 लाख पीएम आवास तैयार हुए हैं। इस बयान का आधार लोकसभा से सांसद बृजमोहन को मिली जानकारी थी। अब सबसे बड़े लड़ईय्या रेऽऽ धम धम धड़ैया रेऽऽ मार्का पॉलिटिक्स करने वाले बबलू भईया कहां चूकने वाले थे। उन्होंने सवाल पूछा है कि बताइए झूठ कौन बोल रहा है। हिंदू ह्रदय सम्राट सुशासन सरकार के चीफ मिनिस्टर से झूठ बोल गए या लोकसभा से जो जानकारी सांसद बिरजू भैया याने बृजमोहन अग्रवाल को मिली है वह गलत है।

ये पतंग उड़ी

एक पतंग अफवाह की हवाओं पर खूब उंची उड़ान उड़ रही है। लेकिन इस पतंग पर जो लिखा है वह कमाल करतब से कमतर नहीं है। इस पतंग के अनुसार पीएचक्यू में वो अफसर जो बगैर प्रभार के हैं, उनका इंतजार खत्म हो रहा है। इन अफसरों को जो प्रभार मिलना है उनमें वो डिपार्टमेंट शामिल होंगे जो कि इस समय हेड ऑफ पुलिस फोर्स याने डीजीपी के पास अतिरिक्त ज़िम्मेदारी के रुप में हैं। इनमें एक अफसर के लिए 'हवा' का बहुत जोर है, लेकिन पतंग पर लिखा है कि मनोवांछित उन्हे हासिल नहीं होगा। पर इन अफवाहों से अलग अपना मानना है कि ये सुशासन सरकार है और जो कर दे वह ही सुशासन है और हर फैसले से सुशासन सरकार पर जनता और करका भरोसा दृढ़ होता है।

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के जन्मदिन पर डोंगरगढ़ विधायक हर्षिता बघेल ने दी बधाई

नई दृष्टिबिंदु / पाटन

पाटन विधानसभा क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री और अकउउ महासचिव भूपेश बघेल के जन्मदिन के अवसर पर डोंगरगढ़ विधायक हर्षिता स्वामी बघेल पहुंचीं और उन्हें बधाई दी। इस अवसर पर विधायक हर्षिता बघेल ने भूपेश बघेल से आत्मीय मुलाकात कर उनके स्वस्थ और दीघार्यु जीवन की कामना की। उन्होंने कहा कि भूपेश बघेल का प्रदेश के विकास के लिए किया गया कार्य सदैव स्मरणीय रहेगा। अपने कार्यकाल में उन्होंने किसानों, मजदूरों, युवाओं और महिलाओं के हितों को प्राथमिकता देते हुए अनेक जनकल्याणकारी कार्य किए।

उन्होंने कहा कि भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की पहचान, संस्कृति और अस्मिता को नई मजबूती मिली है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था और तीज-त्योहारों, लोककला को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कार्यक्रम में कांग्रेस पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ कांग्रेसजन और बड़ी संख्या में समर्थक उपस्थित रहे।

पश्चिम क्षेत्र में अड्डेबाजों पर पुलिस का शिकंजा, 12 गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

पुलिस कमिश्नरेट के पश्चिम क्षेत्र में अड्डेबाजी करने वाले और निगरानी बदमाशों के खिलाफ पुलिस ने विशेष अभियान चलाया है। डीसीपी पश्चिम रॉबिंसन गुड़िया और एडीसीपी पश्चिम राहुल देव शर्मा के मार्गदर्शन में चलाए गए अभियान में कुल 11 प्रकरणों में 12 लोगों के खिलाफ धारा 170, 126 और 135(3) बीएनएसएस के तहत कार्रवाई कर विशेष न्यायालय में पेश किया गया।

थाना-वार कार्रवाई में मुजगहन में 1 प्रकरण में 2 व्यक्ति, न्यू राजेंद्र नगर में 1 प्रकरण में 1 व्यक्ति, टिकरापारा में 2 प्रकरण में 2 व्यक्ति, पुरानी बस्ती में 2 प्रकरण में 2 व्यक्ति और डीडी नगर में 5 प्रकरण में 5 व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई की गई। डीसीपी पश्चिम ने सभी थाना प्रभारियों को अपने क्षेत्र में अड्डेबाजी और संदिग्ध गतिविधियों पर सतत निगरानी रखकर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई जारी रखने के निर्देश दिए हैं।

छुईखदान जनपद में पानी टैंकर खरीद में गड़बड़ी के आरोप CEO की भूमिका पर सवाल

नई दृष्टिबिंदु / छुईखदान

विधायक निधि से जनपद पंचायत छुईखदान की 19 ग्राम पंचायतों के लिए पानी टैंकर खरीदी का मामला विवादों में घिर गया है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि पहले ही फर्म को डेढ़ लाख रुपये का ऑफलाइन भुगतान कर टैंकर पंचायतों में पहुंचा दिए गए, बाद में कलेक्टर की आपत्ति के बाद वही टैंकर GeM प्रक्रिया में दिखाकर फिर से भुगतान किया गया।

शिकायत के अनुसार वर्ष 2023-24 में मां बिंदेश्वरी लेथ मशीन फर्म ने टैंकर सप्लाई की और करीब डेढ़ लाख रुपये का भुगतान जनपद से हो गया। तत्कालीन कलेक्टर ने इस ऑफलाइन खरीद पर आपत्ति जताते हुए GeM पोर्टल से नियमानुसार खरीदी के निर्देश दिए थे। आरोप है कि दो साल बाद 2026-27 में उन्हीं टैंकरों के लिए GeM प्रक्रिया कराई गई और उसी फर्म को फिर से ठेका मिल गया। 19 पंचायतों के लिए 57 लाख रुपये (प्रति टैंकर 3 लाख रुपये) स्वीकृत थे। पहले 14 पंचायतों के लिए 42 लाख और बाद में 5 पंचायतों के लिए 15 लाख का आदेश जारी हुआ था।

पंचायत सचिवों के बयान से बढ़ा शक

देवपुराघाट के सचिव सुरेश झारिया और मोहगांव के तत्कालीन सचिव रामजी जंघेल ने 2023-24 में टैंकर आने और डेढ़ लाख रुपये के चेक भुगतान की पुष्टि की है। वहीं मोहगांव के वर्तमान सरपंच जंगल दास बघेल का कहना है कि टैंकर उनके द्वारा नहीं खरीदा गया, पहले से मौजूद था। इससे सवाल उठ रहा है कि जो टैंकर पहले ही पंचायत में था, उसकी GeM में दोबारा खरीद कैसे हुई ?

भुगतान में भी विरोधाभास

GeM पर 3 लाख की बिड और स्वीकृति है, लेकिन भुगतान डेढ़ लाख रुपये का बताया जा रहा है। यदि GeM ऑर्डर 3 लाख का था तो डेढ़ लाख भुगतान किस आधार पर हुआ, इसका दस्तावेजी हिसाब नहीं मिल रहा।

GeM की तकनीकी जांच की मांग

शिकायतकर्ता ने GeM लॉगिन का क्ढ एड्रेस, यूजर आईडी, डळढ किस नंबर पर आया और बिड कहां से लगी, इसकी जांच की मांग की है। जनपद उएड की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए हैं, क्योंकि खरीद-भुगतान प्रक्रिया जनपद स्तर से संचालित हुई।

इस पर जनपद CEO केश्वरी देवांगन ने कहा कि सीएम पोर्टल पर शिकायत आई है, जांच कराई जाएगी। जिला पंचायत उएड प्रेम कुमार पटेल ने कहा कि जानकारी लेकर ही कुछ बता पाएंगे।

अवैध शराब परिवहन करते दो युवक गिरफ्तार, 30 पौवा जब्त

राजनांदगांव। डोंगरगढ़ पुलिस ने अवैध शराब परिवहन करते दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से 30 पौवा देशी शराब और मोटरसाइकिल सहित कुल 27,800 रुपये का माल जब्त किया गया है। एसपी अंकिता शर्मा के निर्देशन में थाना प्रभारी प्रशिक्षु डीएसपी सुमन जायसवाल की टीम को 22 अगस्त को मुखबिर से सूचना मिली कि दो व्यक्ति बाइक से मुरमुंदा से कुरूभाठ की ओर शराब लेकर आ रहे हैं। सूचना पर ग्राम कुरूभाठ रोड यात्री प्रतीक्षालय के पास घेराबंदी कर तारा सिंह जांगड़े (21) और सुखचंद जोशी (20) को पकड़ा गया।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100